शिवसहस्रनाम[1]

भगवान् विष्णु ने पूर्वकाल में हरीश्वर शिव से सुदर्शन चक्र प्राप्त किया था। एक समय की बात है, दैत्य अत्यन्त प्रबल होकर लोगों को पीड़ा देने और धर्म का लोप करने लगे। उन महाबली और पराक्रमी दैत्यों से पीड़ित हो देवताओं ने देवरक्षक भगवान् विष्णु से अपना सारा दुःख कहा। तब श्रीहरि कैलास पर जाकर भगवान् शिव की विधिपूर्वक आराधना करने लगे। वे हजार नामों से शिव की स्तुति[2] करते तथा प्रत्येक नाम पर एक-एक कमल चढ़ाते जाते थे। भगवान् के वे हजार नाम निम्नलिखित थे -

1. **शिवाय नमः –** कल्याणस्वरूप को नमस्कार है। 2. **हराय नमः –** भक्तों के पाप-ताप हरनेवाले को नमस्कार है। 3. **मृडाय नमः –** सुखदाता को नमस्कार है। 4. **रुद्राय नमः –** दुःख दूर करनेवाले को नमस्कार है। 5. **पुष्कराय नमः –** आकाशस्वरूप को नमस्कार है। 6. **पुष्पलोचनाय नमः –** फूल के समान खिले हुए नेत्रवाले को नमस्कार है। 7. **अर्थिगम्याय नमः –** प्रार्थना करनेवालों को प्राप्त होनेवाले को नमस्कार है। 8. **सदाचाराय नमः –** श्रेष्ठ आचरणवाले को नमस्कार है। 9. **शर्वाय नमः –** संहारकारी या नष्ट करनेवाले को नमस्कार है। 10. **शम्भवे नमः –** कल्याण के निकेतन को नमस्कार है। 11. **महेश्वराय नमः –** महान् ईश्वर को नमस्कार है।

12. **चन्द्रापीडाय नमः –** चन्द्रमा को शिर के आभूषण के रूप में धारण करनेवाले को नमस्कार है। 13. **चन्द्रमौलिने नमः –** शिर पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करनेवाले को नमस्कार है। 14. **विश्वाय नमः –** सर्वस्वरूप (अर्थात् समस्त विश्व जिसका स्वरूप है) को नमस्कार है। 15. **विश्वम्भरेश्वराय नमः –** विश्व का भरण-पोषण करनेवाले को नमस्कार है। 16. **वेदान्तसारसंदोहाय नमः –** वेदान्त के सारतत्त्व सच्चिदानन्दमय ब्रह्म की साकार मूर्ति को नमस्कार है। 17. **कपालिने नमः –** हाथ में (ब्रह्मा का) कपाल धारण करनेवाले को नमस्कार है। 18. **नीललोहिताय नमः –** (गले में) नील और (शेष अंगों में) लोहित वर्णवाले को नमस्कार है।

---

1. भगवान् विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र की प्राप्ति का उल्लेख शिवपुराण के अतिरिक्त वामनपुराण (56/16-45), ब्रह्मपुराण (109/2), सूर्यपुराण (41/12-140) आदि ग्रंथों में पाया जाता है। शिवपुराणोक्त सहस्रनाम थोड़े-बहुत भेद के साथ यथावत् लिंगपुराण (1/98/27-158) तथा सूर्यपुराण के उपर्युक्त सन्दर्भ में भी पाया जाता है।

2. पाठकों की सुविधा के लिये यहाँ पर 'शिवसहस्रनामस्तोत्र' को मूल रूप में न देकर सभी नामों को अलग-अलग करके अर्थसहित दिया गया है। विद्वानों ने इन नामों को अलग-अलग ढंग से श्लोकों से निकाला है। उसका एक कारण यह है कि कुछ लोगों ने जिसे नाम समझा है उसे कुछ ने विशेषण समझा है। उदाहरण के लिये 'जीवितान्तकरः' और 'नित्यः' (787 और 788) नामों की जगह कुछ ने 'जीवितान्तकरो नित्यः' केवल एक नाम स्वीकार किया है (देखें 'शिव उपासना' पृ. 83 जो सत्यवीर शास्त्री द्वारा लिखित तथा मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली द्वारा 1999 में प्रकाशित है।)। दूसरा कारण यह है कि एक से ज्यादा नामों को एक में मिला दिया गया है जैसे

19.ध्यानाधाराय नमः – ध्यान के आधार को नमस्कार है। **20. अपरिच्छेद्याय नमः –** देश, काल और वस्तु की सीमा से विभाजित न होनेवाले(अर्थात् इनकी सीमाओं में न बँधनेवाले) को नमस्कार है। **21. गौरीभर्त्रे नमः –** गौरी अर्थात् पार्वतीजी के पति को नमस्कार है। **22. गणेश्वराय नमः –** प्रमथगणों के स्वामी को नमस्कार है। **23. अष्टमूर्तये नमः –** जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और यजमान– इन आठ रूपोंवाले को नमस्कार है। **24. विश्वमूर्तये नमः –** समस्त ब्रह्माण्डमय विराट् पुरुष को नमस्कार है। **25. त्रिवर्गस्वर्गसाधनाय नमः –** धर्म, अर्थ, काम तथा स्वर्ग की प्राप्ति करानेवाले को नमस्कार है।

26. ज्ञानगम्याय नमः – ज्ञान से ही अनुभव में आने योग्य को नमस्कार है। **27. दृढप्रज्ञाय नमः –** सुस्थिर बुद्धिवाले को नमस्कार है। **28. देवदेवाय नमः –** देवताओं के भी आराध्य को नमस्कार है। **29. त्रिलोचनाय नमः –** सूर्य, चन्द्रमा और अग्निरूप तीन नेत्रोंवाले को नमस्कार है। **30. वामदेवाय नमः –** लोक के विपरीत स्वभाववाले देवता को नमस्कार है। **31. महादेवाय नमः –** महान् देवता अर्थात् ब्रह्मादिकों के भी पूजनीय को नमस्कार है। **32. पटवे नमः –** सब कुछ करने में समर्थ एवं कुशल को नमस्कार है। **33. परिवृढाय नमः –** मालिक या स्वामी को नमस्कार है। **34. दृढाय नमः –** कभी विचलित न होनेवाले को नमस्कार है।

'मनोबुद्धिरहंकार'(648 वाँ नाम) को एक नाम न मान कर कुछ ने 'मनोबुद्धिः' एवं 'अहंकारः' दो नाम माने हैं। (देखें उपर्युक्त 'शिव उपासना' का पृ. 79)। इसका तीसरा कारण यह है कि किसी पद को श्लोकविशेष में अलग–अलग नामों(जो उसके आगे और पीछे स्थित हैं) का विशेषण मान लिया गया है। जैसे कुछ ने 'रजनीजनकश्चारुः' और 'निःशल्यः' (नामसंख्या 663 एवं 664) की जगह 'रजनीजनकः' और 'चारुर्निशल्यः' को नाम माना है(देखें उपर्युक्त 'शिव उपासना' पृ. 80)।

अगर हम ऊपर की तरह कुछ पदों को विशेषण न माने तथा कुछ नामों को संयुक्त न करें तो कुल नामों की संख्या एक हजार से ऊपर बैठती है। यहाँ एक बात और ध्यान देने की है कि कुछ नामों की पुनरावृत्ति की गयी है। उदाहरण के लिये 'शिवः' (नामसंख्या 1 और 150), 'महादेवः'(नामसंख्या 31 और 499), 'ब्रह्मा'(नामसंख्या 50 और 837), 'कालकालः'(नामसंख्या 52 और 960) तथा 'श्मशाननिलयः'(नामसंख्या 94 और 752) आदि। बार–बार आनेवाले नामों के बारे में विद्वानों का यह सुझाव है कि इनके अलग–अलग अर्थ करने चाहिये।

यहाँ पर नामों की सूची गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण से ली गयी है। शिवपुराणोक्त सहस्रनाम के अन्तर्गत पाठभेद भी मिलते हैं। काफी पहले प्रकाशित छः संहिताओंवाले शिवपुराण के 'ज्ञानसंहिता' के 171 वें अध्याय में पाये जानेवाले सहस्रनाम स्तोत्र एवं सक्षिप्त शिवपुराणोक्त स्तोत्र में कई स्थानों पर पाठ भेद है। फलस्वरूप स्तोत्रों में निहित नामों के अन्तर्गत भी भेद हैं।

भगवान् शिव के अनन्त नाम हैं जिनमें से चुने हुए हजार नाम उपर्युक्त स्तोत्र में पाये जाते हैं। भगवान् शिव का किसी भी एक नाम का जप भवसागर से पार लगा सकता है। अतः सामान्य व्यक्ति को इन पाठ भेदों से विचलित न होकर श्रद्धाभक्ति से उपलब्ध किसी भी सहस्रनामस्तोत्र का पाठ कर लेना चाहिये। सभी प्रकार के सहस्रनामों का समान फल होता है। हम आगे अन्य सहस्रनामों की भी चर्चा करेंगे।

35. **विश्वरूपाय नमः –** जगत्स्वरूप को नमस्कार है। 36. **विरूपाक्षाय नमः –** विकट नेत्रवाले को नमस्कार है। 37. **वागीशाय नमः –** वाणी के अधिपति(स्वामी) को नमस्कार है। 38. **शुचिसत्तमाय नमः –** पवित्र पुरुषों में भी सबसे श्रेष्ठ को नमस्कार है। 39. **सर्वप्रमाणसंवादिने नमः –** सम्पूर्ण प्रमाणों में सामञ्जस्य स्थापित करनेवाले को नमस्कार है। 40. **वृषाङ्काय नमः –** अपनी ध्वजा में वृषभ(बैल) का चिन्ह धारण करनेवाले को नमस्कार है। 41. **वृषवाहनाय नमः –** वृषभ या धर्म को वाहन बनानेवाले को नमस्कार है।

42. **ईशाय नमः –** स्वामी या शासक को नमस्कार है। 43. **पिनाकिने नमः –** पिनाक नामक धनुष को धारण करनेवाले को नमस्कार है। 44. **खट्वाङ्गिने नमः –** चारपायी(खाट) के पाये की आकृतिवाले एक आयुध विशेष को धारण करनेवाले को नमस्कार है। 45. **चित्रवेषाय नमः –** विचित्र वेषधारी को नमस्कार है। 46. **चिरंतनाय नमः –** पुराण अर्थात् अनादि पुरुषोत्तम को नमस्कार है। 47. **तमोहराय नमः –** अज्ञानान्धकार को दूर करनेवाले को नमस्कार है। 48. **महायोगिने नमः –** महान् योग से सम्पन्न को नमस्कार है। 49. **गोप्त्रे नमः –** रक्षक को नमस्कार है। 50. **ब्रह्मणे नमः –** सृष्टिकर्त्ता को नमस्कार है। 51. **धूर्जटये नमः –** जटा के भार से युक्त को नमस्कार है।

52. **कालकालाय नमः –** काल के भी काल को नमस्कार है। 53. **कृत्तिवाससे नमः –** गजासुर के चर्म को वस्त्ररूप में धारण करनेवाले को नमस्कार है। 54. **सुभगाय नमः –** सौभाग्यशाली को नमस्कार है। 55. **प्रणवात्मकाय नमः –** ओंकारस्वरूप अथवा प्रणव के अर्थस्वरूप को नमस्कार है। 56. **उन्नद्धाय नमः –** बन्धनरहित को नमस्कार है। 57. **पुरुषाय नमः –** अन्तर्यामी आत्मा को नमस्कार है। 58. **जुष्याय नमः –** सेवन करनेयोग्य को नमस्कार है। 59. **दुर्वाससे नमः –** 'दुर्वासा' नामक मुनि के रूप में अवतार लेनेवाले को नमस्कार है। 60. **पुरशासनाय नमः –** तीन मायामय असुरों के पुरों का दमन करनेवाले को नमस्कार है।

61. **दिव्यायुधाय नमः –** 'पाशुपत' आदि दिव्य अस्त्र धारण करनेवाले को नमस्कार है। 62. **स्कन्दगुरवे नमः –** कार्तिकेयजी के पिता को नमस्कार है। 63. **परमेष्ठिने नमः –** अपनी उच्चतम महिमा में स्थित रहनेवाले को नमस्कार है। 64. **परात्पराय नमः –** कारण के भी कारण को नमस्कार है। 65. **अनादिमध्यनिधनाय नमः –** आदि, मध्य और अन्त से रहित को नमस्कार है। 66. **गिरीशाय नमः –** कैलास के अधिपति को नमस्कार है। 67. **गिरिजाधवाय नमः –** पार्वती के पति को नमस्कार है।

68. **कुबेरबन्धवे नमः –** कुबेर को अपना बन्धु(मित्र) माननेवाले को नमस्कार है। 69. **श्रीकण्ठाय नमः –** श्यामसुषमा से सुशोभित कण्ठवाले को नमस्कार है। 70. **लोकवर्णोत्तमाय नमः –** समस्त लोकों एवं वर्णों से श्रेष्ठ को नमस्कार है। 71. **मृदवे नमः –** कोमल स्वभाववाले को नमस्कार है। 72. **समाधिवेद्याय नमः –** समाधि अथवा चित्तवृत्तियों के निरोध से अनुभव में आनेयोग्य को नमस्कार है। 73. **कोदण्डिने नमः –** धनुर्धर को नमस्कार है। 74. **नीलकण्ठाय नमः –** कण्ठ में हालाहल विष का नील

चिन्ह धारण करनेवाले को नमस्कार है। 75. **परश्वधिने नमः –** परशुधारी को नमस्कार है।

76. **विशालाक्षाय नमः –** बड़े-बड़े नेत्रोंवाले को नमस्कार है। 77. **मृगव्याधाय नमः –** वन में व्याध या किरात के रूप में प्रकट हो शूकर(सुअर) के ऊपर बाण चलानेवाले को नमस्कार है। 78. **सुरेशाय नमः –** देवताओं के स्वामी को नमस्कार है। 79. **सूर्यतापनाय नमः –** सूर्य को दण्ड देनेवाले को नमस्कार है। 80. **धर्मधाम्ने नमः –** धर्म के आश्रय को नमस्कार है। 81. **क्षमाक्षेत्राय नमः –** क्षमा के उत्पत्ति-स्थान को नमस्कार है। 82. **भगवते नमः –** सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान तथा वैराग्य के आश्रय को नमस्कार है। 83. **भगनेत्रभिदे नमः –** भगदेवता के नेत्र का भेदन करनेवाले को नमस्कार है।

84. **उग्राय नमः –** संहारकाल में भयंकर रूप धारण करनेवाले को नमस्कार है। 85. **पशुपतये नमः –** माया में बँधे हुए पशुओं(जीवों) को तत्त्वज्ञान के द्वारा मुक्त करके यथार्थरूप से उनका पालन करनेवाले को नमस्कार है। 86. **तार्क्ष्याय नमः –** गरुड़रूप को नमस्कार है। 87. **प्रियभक्ताय नमः –** भक्तों से प्रेम करनेवाले को नमस्कार है। 88. **परंतपाय नमः –** शत्रुता रखनेवालों को संताप देनेवाले को नमस्कार है। 89. **दात्रे नमः –** दानी को नमस्कार है। 90. **दयाकराय नमः –** दयानिधान अथवा कृपा करनेवाले को नमस्कार है। 91. **दक्षाय नमः –** कुशल को नमस्कार है। 92. **कपर्दिने नमः –** जटाजूटधारी को नमस्कार है। 93. **कामशासनाय नमः –** कामदेव का दमन करनेवाले को नमस्कार है।

94. **श्मशाननिलयाय नमः –** श्मशानवासी को नमस्कार है। 95. **सूक्ष्माय नमः –** इन्द्रियातीत एवं सर्वव्यापी को नमस्कार है। 96. **श्मशानस्थाय नमः –** श्मशानभूमि में विश्राम करनेवाले को नमस्कार है। 97. **महेश्वराय नमः –** महान् ईश्वर या परमेश्वर को नमस्कार है। 98. **लोककर्त्रे नमः –** जगत् की सृष्टि करनेवाले को नमस्कार है। 99. **मृगपतये नमः –** मृग के पालक या पशुपति को नमस्कार है। 100. **महाकर्त्रे नमः –** विराट् ब्रह्माण्ड की सृष्टि करने के समय महान् कर्तृत्व से सम्पन्न को नमस्कार है। 101. **महौषधये नमः –** भवरोग का निवारण करने के लिये महान् औषधिरूप को नमस्कार है।

102. **उत्तराय नमः –** संसार-सागर से पार उतारनेवाले को नमस्कार है। 103. **गोपतये नमः –** स्वर्ग, पृथ्वी, पशु, वाणी, किरण, इन्द्रिय और जल के स्वामी को नमस्कार है। 104. **गोप्त्रे नमः –** रक्षक को नमस्कार है। 105. **ज्ञानगम्याय नमः –** तत्त्वज्ञान के द्वारा जाननेयोग्य को नमस्कार है। 106. **पुरातनाय नमः –** सबसे प्राचीन को नमस्कार है। 107. **नीतये नमः –** न्याय-स्वरूप को नमस्कार है। 108. **सुनीतये नमः –** उत्तम नीतिवाले को नमस्कार है। 109. **शुद्धात्मने नमः –** विशुद्ध आत्मस्वरूप को नमस्कार है। 110. **सोमाय नमः –** उमा के साथ रहनेवाले को नमस्कार है। अथवा चन्द्ररूप से औषधियों को पुष्ट करनेवाले को नमस्कार है। 111. **सोमरताय नमः –** चन्द्रमा पर प्रेम रखनेवाले को नमस्कार है। 112. **सुखिने नमः –** आत्मानन्द से परिपूर्ण को नमस्कार है।

113. **सोमपाय नमः –** सोमपान करनेवाले अथवा सोमनाथरूप से चन्द्रमा के पालक को नमस्कार है। 114. **अमृतपाय नमः –** समाधि के द्वारा स्वरूपभूत अमृत का आस्वादन करनेवाले को नमस्कार है। 115.

सौम्याय नमः – भक्तों के लिये कोमल(सौम्य) रूप धारण करनेवाले को नमस्कार है। 116. **महातेजसे नमः –** महान् तेज से सम्पन्न को नमस्कार है। 117. **महाद्युतये नमः –** परम कान्तिमान्(तेजयुक्त) को नमस्कार है। 118. **तेजोमयाय नमः –** प्रकाशस्वरूप को नमस्कार है। 119. **अमृतमयाय नमः –** अमृतरूप को नमस्कार है। 120. **अन्नमयाय नमः –** अन्नरूप को नमस्कार है। 121. **सुधापतये नमः –** अमृत के पालक को नमस्कार है।

122. **अजातशत्रवे नमः –** जिनके मन में कभी किसी के प्रति शत्रुभाव नहीं पैदा हुआ, ऐसे समदर्शी को नमस्कार है। 123. **आलोकाय नमः –** प्रकाशस्वरूप को नमस्कार है। 124. **सम्भाव्याय नमः –** सम्माननीय को नमस्कार है। 125. **हव्यवाहनाय नमः –** अग्निस्वरूप को नमस्कार है। 126. **लोककराय नमः –** जगत् के स्रष्टा को नमस्कार है। 127. **वेदकराय नमः –** वेदों को प्रकट करनेवाले को नमस्कार है। 128. **सूत्रकाराय नमः –** ढक्कानाद के रूप में चौदह माहेश्वर सूत्रों के प्रणेता अथवा सूत्रकर्ता व्यासादि का रूप धारण करनेवाले को नमस्कार है। 129. **सनातनाय नमः –** नित्यस्वरूप को नमस्कार है।

130. **महर्षिकपिलाचार्याय नमः –** सांख्यशास्त्र के प्रणेता भगवान् कपिलाचार्य को नमस्कार है। 131. **विश्वदीप्तये नमः –** अपनी प्रभा से सबको प्रकाशित करनेवाले को नमस्कार है। 132. **त्रिलोचनाय नमः –** तीन नेत्रोंवाले अथवा तीनों लोकों के द्रष्टा को नमस्कार है। 133. **पिनाकपाणये नमः –** हाथ में पिनाक नामक धनुष धारण करनेवाले को नमस्कार है। 134. **भूदेवाय नमः –** पृथ्वी के देवता – ब्राह्मण अथवा पार्थिवलिंगरूप को नमस्कार है। 135. **स्वस्तिदाय नमः –** कल्याणदाता को नमस्कार है। 136. **स्वस्तिकृते नमः –** कल्याणकारी को नमस्कार है। 137. **सुधिये नमः –** विशुद्ध बुद्धिवाले को नमस्कार है।

138. **धातृधाम्ने नमः –** विश्व का धारण – पोषण करने में समर्थ तेजवाले को नमस्कार है। 139. **धामकराय नमः –** तेज की सृष्टि करनेवाले को नमस्कार है। 140. **सर्वगाय नमः –** सर्वव्यापी को नमस्कार है। 141. **सर्वगोचराय नमः –** सबमें व्याप्त को नमस्कार है। 142. **ब्रह्मसृजे नमः –** ब्रह्माजी के उत्पादक को नमस्कार है। 143. **विश्वसृजे नमः –** जगत् के स्रष्टा को नमस्कार है। 144. **सर्गाय नमः –** सृष्टिस्वरूप को नमस्कार है। 145. **कर्णिकारप्रियाय नमः –** कनेर के फूल को पसंद करनेवाले को नमस्कार है। 146. **कवये नमः –** त्रिकालदर्शी को नमस्कार है।

147. **शाखाय नमः –** कार्तिकेय के छोटे भाई शाखस्वरूप अथवा शाख नामक ऋषिरूप को नमस्कार है। 148. **विशाखाय नमः –** स्कन्द के छोटे भाई विशाखस्वरूप अथवा विशाख नामक ऋषिरूप को नमस्कार है। 149. **गोशाखाय नमः –** वेदवाणी की शाखाओं का विस्तार करनेवाले को नमस्कार है। 150. **शिवाय नमः –** मंगलमय को नमस्कार है। 151. **भिषगनुत्तमाय नमः –** भवरोग का निवारण करनेवाले वैद्यों(ज्ञानियों) में सर्वश्रेष्ठ को नमस्कार है। 152. **गङ्गाप्लवोदकाय नमः –** गंगा के प्रवाहरूप जल को सिर पर धारण करनेवाले को नमस्कार है। 153. **भव्याय नमः –** सर्वकल्याण युक्त को नमस्कार है। 154. **पुष्कलाय नमः –** पूर्णतम अथवा व्यापक को नमस्कार है। 155. **स्थपतये नमः –** ब्रह्माण्डरूपी भवन के निर्माता को

नमस्कार है। **156. स्थिराय नमः –** अचंचल अथवा स्थाणुरूप को नमस्कार है।

157. विजितात्मने नमः – मन को वश में रखनेवाले को नमस्कार है। **158. विधेयात्मने नमः –** शरीर, मन और इन्द्रियों से अपनी इच्छा के अनुसार काम लेनेवाले को नमस्कार है। **159. भूतवाहनसारथये नमः –** पंचभौतिक रथ(शरीर) का संचालन करनेवाले बुद्धिरूप सारथी को नमस्कार है। **160. सगणाय नमः –** प्रमथगणों के साथ रहनेवाले को नमस्कार है। **161. गणकायाय नमः –** गणस्वरूप को नमस्कार है। **162. सुकीर्तये नमः –** उत्तम कीर्तिवाले को नमस्कार है। **163. छिन्नसंशयाय नमः –** संशयों को काट देनेवाले को नमस्कार है।

164. कामदेवाय नमः – मनुष्यों द्वारा अभिलषित(इच्छित) सभी कामनाओं के अधिष्ठाता परमदेव को नमस्कार है। **165. कामपालाय नमः –** सकाम भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करनेवाले को नमस्कार है। **166. भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः –** अपने श्रीअंगों में भस्म रमानेवाले को नमस्कार है। **167. भस्मप्रियाय नमः –** भस्म के प्रेमी को नमस्कार है। **168. भस्मशायिने नमः –** भस्म पर शयन करनेवाले को नमस्कार है। **169. कामिने नमः –** अपने प्रिय भक्तों को चाहनेवाले को नमस्कार है। **170. कान्ताय नमः –** परम कमनीय प्राणपतिरूप को नमस्कार है। **171. कृतागमाय नमः –** समस्त आगमों(तन्त्रशास्त्रों) के रचयिता को नमस्कार है।

172. समावर्ताय नमः – संसारचक्र को भलीभाँति घुमानेवाले को नमस्कार है। **173. अनिवृत्तात्मने नमः –** सर्वत्र विद्यमान होने के कारण जिनका आत्मा कहीं से भी हटा हुआ नहीं है उनको नमस्कार है। **174. धर्मपुञ्जाय नमः –** धर्म या पुण्य की राशि को नमस्कार है। **175. सदाशिवाय नमः –** निरन्तर कल्याणकारी को नमस्कार है। **176. अकल्मषाय नमः –** पापरहित को नमस्कार है। **177. चतुर्बाहवे नमः –** चार भुजाधारी को नमस्कार है। **178. दुरावासाय नमः –** जिन्हें योगीजन भी बड़ी कठिनाई से अपने हृदय में बसा पाते हैं उन्हें नमस्कार है। **179. दुरासदाय नमः –** परम दुर्जय को नमस्कार है।

180. दुर्लभाय नमः – भक्तिहीन पुरुषों को कठिनता से प्राप्त होनेवाले को नमस्कार है। **181. दुर्गमाय नमः –** जिनके निकट पहुँचना किसी के लिये भी कठिन है, उसे नमस्कार है। **182. दुर्गाय नमः –** पाप-ताप से रक्षा करने के लिये दुर्गरूप अथवा दुर्ज्ञेय को नमस्कार है। **183. सर्वायुधविशारदाय नमः –** सम्पूर्ण अस्त्रों के प्रयोग की कला में कुशल को नमस्कार है। **184. अध्यात्मयोगनिलयाय नमः –** अध्यात्मयोग में स्थित को नमस्कार है। **185. सुतन्तवे नमः –** सुन्दर विस्तृत जगत्रूप तन्तुवाले को नमस्कार है। **186. तन्तुवर्धनाय नमः –** जगत्-रूप तन्तु को बढ़ानेवाले को नमस्कार है।

187. शुभाङ्गाय नमः – सुन्दर अंगोंवाले को नमस्कार है। **188. लोकसारङ्गाय नमः –** लोकसारग्राही या सारंग(हिरण) के समान लोक का सार ग्रहण करनेवाले अर्थात् लोक का सार ॐकार के जाननेवाले को नमस्कार है। **189. जगदीशाय नमः –** जगत् के स्वामी को नमस्कार है। **190. जनार्दनाय नमः –** भक्तजनों की याचना के आलम्बन को नमस्कार है। **191. भस्मशुद्धिकराय नमः –** भस्म से

शुद्धिका संपादन करनेवाले को नमस्कार है। 192. **मेरवे नमः –** सुमेरु पर्वत के समान केन्द्ररूप को नमस्कार है। 193. **ओजस्विने नमः –** तेज और बल से सम्पन्न को नमस्कार है। 194. **शुद्धविग्रहाय नमः –** निर्मल शरीरवाले को नमस्कार है।

195. **असाध्याय नमः –** साधन-भजन से दूर रहनेवाले लागों के लिये जो अलभ्य है उसको नमस्कार है। 196. **साधुसाध्याय नमः –** साधन-भजन परायण सत्पुरुषों के लिये जो सुलभ है, उसे नमस्कार है। 197. **भृत्यमर्कटरूपधृशे नमः –** श्रीराम के सेवक वानर हनुमान् का रूप धारणकरनेवाले को नमस्कार है। 198. **हिरण्यरेतसे नमः –** अग्निरूप अथवा सुवर्णमय वीर्यवाले को नमस्कार है। 199. **पौराणाय नमः –** पुराणोंद्वारा प्रतिपादित को नमस्कार है। 200. **रिपुजीवहराय नमः –** शत्रुओं के प्राण हर लेनेवाले को नमस्कार है। 201. **बलिने नमः –** बलशाली को नमस्कार है।

202. **महाह्रदाय नमः –** परमानन्द के महान् सरोवर को नमस्कार है। 203. **महागर्ताय नमः –** महान् आकाशरूप को नमस्कार है। 204. **सिद्धवृन्दारवन्दिताय नमः –** सिद्धों एवं देवताओं द्वारा वन्दित को नमस्कार है। 205. **व्याघ्रचर्माम्बराय नमः –** व्याघ्रचर्म को वस्त्र के समान धारण करनेवाले को नमस्कार है। 206. **व्यालिने नमः –** सर्पों को आभूषण की भाँति धारण करनेवाले को नमस्कार है। 207. **महाभूताय नमः –** त्रिकाल में कभी नष्ट न होनेवाले महाभूतस्वरूप को नमस्कार है। 208. **महानिधये नमः –** सबके महान् निवासस्थान को नमस्कार है।

209. **अमृताशाय नमः –** जिनकी आशा कभी विफल न हो ऐसे अमोघ संकल्पवाले अथवा स्वात्मानन्द अमृतरस के पान करनेवाले को नमस्कार है। 210. **अमृतवपुषे नमः –** मरणरहित शरीरवाले अर्थात् जिसका कलेवर कभी नष्ट न हो ऐसे-नित्यविग्रह को नमस्कार है। 211. **पाञ्चजन्याय नमः –** पाञ्चजन्य नामक शंखरूप को नमस्कार है। 212. **प्रभञ्जनाय नमः –** वायुस्वरूप अथवा संहारकारी अथवा भक्तों के मायारूपी आवरण के नाश करनेवाले को नमस्कार है। 213. **पञ्चविंशतितत्त्वस्थाय नमः –** पचीस तत्त्वों(प्रकृति, महत्तत्त्व या बुद्धि, अहंकार, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना, त्वक्, वाक्, पाणि, पायु, पाद, उपस्थ अर्थात् पाँच ज्ञानेन्द्रिय एवं पाँच कर्मेन्द्रिय, मन, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध अर्थात् पाँच तन्मात्रायें, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश अर्थात् पाँच महाभूत-इन चौबीस जड़ तत्त्वोंसहित चेतनतत्त्व पुरुष) में व्याप्त को नमस्कार है। 214. **पारिजाताय नमः –** याचकों या भक्तों की इच्छा पूर्ण करने में कल्पवृक्षरूप को नमस्कार है। 215. **परावराय नमः –** ब्रह्म और जगत्स्वरूप अथवा कारण-कार्यरूप को नमस्कार है।

216. **सुलभाय नमः –** श्रद्धालु भक्तों को सुगमता से प्राप्त होनेवाले को नमस्कार है। 217. **सुव्रताय नमः –** उत्तम व्रतधारी को नमस्कार है। 218. **शूराय नमः –** शौर्यसम्पन्न को नमस्कार है। 219. **ब्रह्मवेदनिधये नमः –** ब्रह्मा एवं वेद के प्रदुर्भाव के स्थान को नमस्कार है। 220. **निधये नमः –** जगत्रूपी रत्न के उत्पत्तिस्थान को नमस्कार है। 221. **वर्णाश्रमगुरवे नमः –** सभी वर्णों एवं आश्रमों के गुरु या उपदेष्टा को नमस्कार है। 222. **वर्णिने नमः –** ब्रह्मचारीस्वरूप को नमस्कार है। 223. **शत्रुजिते**

नमः – (अन्धकासुर आदि)देवशत्रुओं को जीतनेवाले को नमस्कार है। **224. शत्रुतापनाय नमः –** शत्रुओं को सन्ताप देनेवाले को नमस्कार है।

225. आश्रमाय नमः – सबके विश्रामस्थल को नमस्कार है। **226. क्षपणाय नमः –** जन्म-मरण के कष्ट का मूल समाप्त करनेवाले अथवा भक्तों के पाप क्षय करनेवाले को नमस्कार है। **227. क्षामाय नमः –** प्रलयकाल में प्रजा को क्षीण करनेवाले को नमस्कार है। **228. ज्ञानवते नमः –** नित्य ज्ञानयुक्त अथवा ज्ञानी को नमस्कार है। **229. अचलेश्वराय नमः –** पर्वतों अथवा स्थावर पदार्थों के स्वामी को नमस्कार है। **230. प्रमाणभूताय नमः –** नित्यसिद्ध प्रमाणरूप को नमस्कार है। **231. दुर्ज्ञेयाय नमः –** कठिनता से जाननेयोग्य को नमस्कार है। **232. सुपर्णाय नमः –** धर्म एवं अधर्मरूप सुन्दर पंखवाले गरुड़रूप को नमस्कार है। **233. वायुवाहनाय नमः –** जिसके भय से वायु प्राणियों को वहन करती है उसे अथवा अपने भय से वायु को प्रवाहित करनेवाले को नमस्कार है।

234. धनुर्धराय नमः – पिनाक नामक धनुष को धारण करनेवाले को नमस्कार है। **235. धनुर्वेदाय नमः –** धनुर्वेद के ज्ञाता या धनुर्वेद जिससे प्रकट हुआ है, उसे नमस्कार है। **236. गुणराशये नमः –** अनन्त कल्याणमय गुणों की राशि को नमस्कार है। **237. गुणाकराय नमः –** (योग, सांख्य, तप, विद्या, सत्य, दया, अहिंसा, क्षमा, दम, शान्ति, विद्या, धृति और गति आदि) सद्गुणों की खान को नमस्कार है। **238. सत्याय नमः –** सत्यस्वरूप को नमस्कार है। **239. सत्यपराय नमः –** सत्यपरायण को नमस्कार है। **240. अदीनाय नमः –** दीनता से रहित-उदार अथवा सदा संतुष्ट रहनेवाले को नमस्कार है। **241. धर्माङ्गाय नमः –** धर्ममय विग्रहवाले अर्थात् धर्ममय शरीरवाले को नमस्कार है। **242. धर्मसाधनाय नमः –** धर्म का अनुष्ठान या साधन करनेवाले को नमस्कार है।

243. अनन्तदृष्टये नमः – असीमित दृष्टिवाले को नमस्कार है। **244. आनन्दाय नमः –** परमानन्दमय अथवा अत्यन्त सुखस्वरूप को नमस्कार है। **245. दण्डाय नमः –** दुष्टों को दण्ड देनेवाले अथवा दण्डस्वरूप को नमस्कार है। **246. दमयित्रे नमः –** दुर्दान्त दानवों का दमन करनेवाले को नमस्कार है। **247. दमाय नमः –** इन्द्रियनिग्रहरूप को नमस्कार है। **248. अभिवाद्याय नमः –** प्रणाम करनेयोग्य को नमस्कार है। **249. महामायाय नमः –** मायावियों को भी मोहनेवाले महामायावी को नमस्कार है। **250. विश्वकर्मविशारदाय नमः –** संसार की सृष्टि करने अथवा सभी कलाओं में कुशल को नमस्कार है।

251. वीतरागाय नमः – पूर्णतया विरक्त अथवा भक्तों के राग-द्वेषादि को दूर करनेवाले को नमस्कार है। **252. विनीतात्मने नमः –** मन से विनयशील अथवा मन को वश में करनेवाले को नमस्कार है। **253. तपस्विने नमः –** तपस्यापरायण को नमस्कार है। **254. भूतभावनाय नमः –** सम्पूर्ण भूतों के उत्पादक एवं रक्षक को नमस्कार है। **255. उन्मत्तवेषाय नमः –** पागलों के समान वेष धारण करनेवाले को नमस्कार है। **256. प्रच्छन्नाय नमः –** माया के पर्दे में छिपे हुए को नमस्कार है। **257. जितकामाय नमः –** काम को जीतनेवाले को नमस्कार है। **258. अजितप्रियाय नमः –** भगवान् विष्णु के प्रेमी को

नमस्कार है।

259. कल्याणप्रकृतये नमः – कल्याणकारी अथवा श्रेष्ठ स्वभाववाले को नमस्कार है। **260. कल्पाय नमः –** समर्थ अथवा सबके आदि कारण को नमस्कार है। **261. सर्वलोकप्रजापतये नमः –** सम्पूर्णलोकों की प्रजा के पालक को नमस्कार है। **262. तरस्विने नमः –** (भक्तों की रक्षा में) वेगवान् को नमस्कार है। **263. तारकाय नमः –** भवसागर से उद्धार करानेवाले को नमस्कार है। **264. धीमते नमः –** विशुद्ध बुद्धि से युक्त को नमस्कार है। **265. प्रधानाय नमः –** सबसे श्रेष्ठ अथवा प्रकृतिरूप को नमस्कार है। **266. प्रभवे नमः –** सर्वसमर्थ को नमस्कार है। **267. अव्ययाय नमः –** नाशरहित को नमस्कार है।

268. लोकपालाय नमः – समस्त लोकों की रक्षा करनेवाले को नमस्कार है। **269. अन्तर्हितात्मने नमः –** अन्तर्यामी आत्मा अथवा अदृश्य रूपवाले को नमस्कार है। **270. कल्पादये नमः –** कल्प के आदि कारण को नमस्कार है। **271. कमलेक्षणाय नमः –** कमल के समान नेत्रवाले अथवा जिसकी दृष्टि में लक्ष्मी निवास करती हैं, उसे नमस्कार है। **272. वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञाय नमः –** वेदों एवं शास्त्रों के अर्थ एवं तत्त्व को जाननेवाले अथवा जिनसे मुनि लोग वेद एवं शास्त्रों के अर्थ जानते हैं, उन्हें नमस्कार है। **273. अनियमाय नमः –** नियन्त्रणरहित को नमस्कार है। **274. नियताश्रयाय नमः –** सबके सुनिश्चित आश्रय-स्थान को नमस्कार है।

275. चन्द्राय नमः – चन्द्रमारूप से आनंद प्रदान करनेवाले को नमस्कार है। **276. सूर्याय नमः –** सबकी उत्पत्ति के हेतुभूत सूर्य को नमस्कार है। **277. शनये नमः –** शनैश्चररूप को नमस्कार है। **278. केतवे नमः –** केतु अथवा धूमकेतु रूप को नमस्कार है। **279. वराङ्गाय नमः –** सुन्दर या श्रेष्ठ शरीरवाले को नमस्कार है। **280. विद्रुमच्छवये नमः –** मूंगे की-सी लाल कान्तिवाले अथवा मंगलरूप को नमस्कार है। **281. भक्तिवश्याय नमः –** भक्ति के द्वारा भक्तों के वश में होनेवाले को नमस्कार है। **282. परब्रह्मणे नमः –** परमात्मा को नमस्कार है। **283. मृगबाणार्पणाय नमः –** मृगरूपधारी यज्ञ पर बाण चलानेवाले को नमस्कार है। **284. अनघाय नमः –** पापरहित को नमस्कार है।

285. अद्रये नमः – सुमेरु आदि पर्वतस्वरूप को नमस्कार है। **286. अद्र्यालयाय नमः –** कैलास और मन्दर आदि पर्वतों पर निवास करनेवाले को नमस्कार है। **287. कान्ताय नमः –** सबके प्रियतम को नमस्कार है। **288. परमात्मने नमः –** परब्रह्म परमेश्वर को नमस्कार है। **289. जगद्गुरवे नमः –** समस्त संसार के गुरु अथवा जगत् को हित का उपदेश देनेवाले को नमस्कार है। **290. सर्वकर्मालयाय नमः –** सम्पूर्ण कर्मों के आश्रयस्थान को नमस्कार है। **291. तुष्टाय नमः –** सदा प्रसन्न रहनेवाले को नमस्कार है। **292. मङ्गल्याय नमः –** मंगलकारी को नमस्कार है। **293. मङ्गलावृताय नमः –** मंगलकारिणी शक्ति से संयुक्त को नमस्कार है।

294. महातपसे नमः – महान् तपस्वी को नमस्कार है। **295. दीर्घतपसे नमः –** दीर्घकालतक तप करनेवाले को नमस्कार है। **296. स्थविष्ठाय नमः –** अत्यन्त स्थूल को नमस्कार है। **297. स्थविर –**

ध्रुवाय नमः – अति प्राचीन या वृद्ध एवं अत्यन्त स्थिर रहनेवाले को नमस्कार है। **298. अहःसंवत्सराय नमः –** दिन एवं संवत्सर आदि कालरूप से स्थित, अंशकालस्वरूप को नमस्कार है। **299. व्याप्तये नमः –** सर्वत्र विद्यमानतास्वरूप को नमस्कार है। **300. प्रमाणाय नमः –** (प्रत्यक्षादि) प्रमाणस्वरूप को नमस्कार है। **301. परमतपसे नमः –** उत्कृष्ट तपस्यास्वरूप को नमस्कार है।

302. संवत्सरकराय नमः – संवत्सर आदि कालचक्र के प्रवर्तक अथवा प्रभव आदि वत्सरों के उत्पादक को नमस्कार है। **303. मन्त्रप्रत्ययाय नमः –** वेद आदि मन्त्रों से प्रतीत(प्रत्यक्ष) होनेयोग्य को नमस्कार है। **304. सर्वदर्शनाय नमः –** सबके साक्षी को नमस्कार है। **305. अजाय नमः –** अजन्मा को नमस्कार है। **306. सर्वेश्वराय नमः –** सबके ईश्वर या शासक को नमस्कार है। **307. सिद्धाय नमः –** सिद्धियों के आश्रय को नमस्कार है। **308. महारेतसे नमः –** श्रेष्ठ वीर्यवाले या महावीर्यवान् को नमस्कार है। **309. महाबलाय नमः –** महापराक्रमी या प्रमथगणों की महती सेना से सम्पन्न को नमस्कार है।

310. योगियोग्याय नमः – सुयोग्य योगी अथवा नित्ययोगयुक्त को नमस्कार है। **311. महातेजसे नमः –** महान् तेज से सम्पन्न अथवा महान् प्रभाव से युक्त को नमस्कार है। **312. सिद्धये नमः –** समस्त साधनों के फल को नमस्कार है। **313. सर्वादये नमः –** सभी भूतों के आदि कारण को नमस्कार है। **314. अग्रहाय नमः –** इन्द्रियों की ग्रहणशक्ति से परे को नमस्कार है। **315. वसवे नमः –** सभी भूतों के वासस्थान को नमस्कार है। **316. वसुमनसे नमः –** उदार मनवाले को नमस्कार है। **317. सत्याय नमः –** सत्यस्वरूप को नमस्कार है। **318. सर्वपापहरहराय नमः –** समस्त पापों का अपहरण करने के कारण हर नाम से प्रसिद्ध को नमस्कार है।

319. सुकीर्तिशोभनाय नमः – उत्तम कीर्ति से सुशोभित होनेवाले को नमस्कार है। **320. श्रीमते नमः –** विभूतिस्वरूपा उमा से सम्पन्न को नमस्कार है। **321. वेदाङ्गाय नमः –** वेदरूप अंगोंवाले को नमस्कार है। **322. वेदविन्मुनये नमः –** वेदों का विचार करनेवाले मननशील मुनि को नमस्कार है। **323. भ्राजिष्णवे नमः –** एकरस प्रकाशस्वरूप को नमस्कार है। **324. भोजनाय नमः –** ज्ञानियों द्वारा भोगनेयोग्य अमृतस्वरूप को नमस्कार है। **325. भोक्त्रे नमः –** पुरुषरूप से उपभोग करनेवाले को नमस्कार है। **326. लोकनाथाय नमः –** संसार के स्वामी को नमस्कार है। **327. दुराधराय नमः –** अजितेन्द्रियों द्वारा जिनकी आराधना कठिन है उनको नमस्कार है।

328. अमृतशाश्वताय नमः – सनातन अमृतस्वरूप को नमस्कार है। **329. शान्ताय नमः –** शान्तिमय को नमस्कार है। **330. बाणहस्तप्रतापवते नमः –** हाथ में बाण धारण करनेवाले प्रतापी वीर को नमस्कार है। **331. कमण्डलुधराय नमः –** कमण्डलु धारण करनेवाले को नमस्कार है। **332. धन्विने नमः –** पिनाकधारी को नमस्कार है। **333. अवाङ्मनसगोचराय नमः –** मन और वाणी के जो विषय नहीं हैं उन्हें नमस्कार है।

334. अतीन्द्रियमहामायाय नमः – इन्द्रियातीत एवं महामायावी को नमस्कार है। **335.**

सर्वावासाय नमः – सबके वासस्थान अथवा सबमें वास करनेवाले को नमस्कार है। **336. चतुष्पथाय नमः –** चारों पुरुषार्थों के एकमात्र मार्ग को नमस्कार है। **337. कालयोगिने नमः –** प्रलय के समय सबको काल से संयुक्त करनेवाले को नमस्कार है। **338. महानादाय नमः –** गम्भीर शब्द करनेवाले अथवा अनाहत नादरूपवाले को नमस्कार है। **339. महोत्साहमहाबलाय नमः –** महान् उत्साह एवं बल से सम्पन्न को नमस्कार है।

340. महाबुद्धये नमः – श्रेष्ठबुद्धिवाले को नमस्कार है। **341. महावीर्याय नमः –** अनन्त पराक्रमी को नमस्कार है। **342. भूतचारिणे नमः –** भूतगणों के साथ विचरनेवाले को नमस्कार है। **343. पुरंदराय नमः –** त्रिपुरसंहारक को नमस्कार है। **344. निशाचराय नमः –** रात्रि में विचरण करनेवाले को नमस्कार है। **345. प्रेतचारिणे नमः –** प्रेतों के साथ भ्रमण करनेवाले को नमस्कार है। **346. महाशक्तिमहाद्युतये नमः –** अनन्तशक्ति और श्रेष्ठ कान्ति से सम्पन्न को नमस्कार है।

347. अनिर्देश्यवपुषे नमः – अनिर्वचनीय स्वरूपवाले या अगम्य स्वरूपवाले को नमस्कार है। **348. श्रीमते नमः –** ऐश्वर्यवान् को नमस्कार है। **349. सर्वाचार्यमनोगतये नमः –** सब आचार्यों के मन में जिनके द्वारा ज्ञान पैदा होता है उसे, अथवा सबके लिये अविचार्य मनोगतिवाले को, नमस्कार है। **350. बहुश्रुताय नमः –** जिनसे अनेक शास्त्र पैदा हुए हैं, अथवा जो बहुज्ञ या सर्वज्ञ है, उसे नमस्कार है। **351. अमहामायाय नमः –** बड़ी-से-बड़ी माया भी जिन पर प्रभाव नहीं डाल सकती उसे नमस्कार है। **352. नियतात्मने नमः –** मन को वश में रखनेवाले को नमस्कार है। **353. ध्रुवाऽध्रुवाय नमः –** नित्यकारण और अनित्यकार्यरूप को नमस्कार है।

354. ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः – ओज(प्राण और बल), तेज(शौर्य आदि गुण) तथा ज्ञान की दीप्ति को धारण करनेवाले को नमस्कार है। **355. जनकाय नमः –** सबके उत्पादक को नमस्कार है। **356. सर्वशासनाय नमः –** सबके शासक या नियन्ता को नमस्कार है। **357. नृत्यप्रियाय नमः –** नृत्य के प्रेमी को नमस्कार है। **358. नित्यनृत्याय नमः –** प्रतिदिन ताण्डव नृत्य करनेवाले को नमस्कार है। **359. प्रकाशात्मने नमः –** प्रकाशस्वरूप को नमस्कार है। **360. प्रकाशकाय नमः –** सूर्य आदि को भी प्रकाश देनेवाले को नमस्कार है।

361. स्पष्टाक्षराय नमः – ओंकाररूप स्पष्ट अक्षरवाले को नमस्कार है। **362. बुधाय नमः –** ज्ञानवान् अथवा सर्वज्ञ को नमस्कार है। **363. मन्त्राय नमः –** ऋक्, साम और यजुर्वेद के मन्त्रस्वरूप को नमस्कार है। **364. समानाय नमः –** सबके प्रति समान भाव रखनेवाले को नमस्कार है। **365. सारसम्प्लवाय नमः –** संसारसागर से पार होने के लिये नौकारूप को नमस्कार है। **366. युगादिकृद्युगावर्ताय नमः –** युगादि का आरम्भ करनेवाले तथा चारों युगों को चक्र की तरह घुमानेवाले को नमस्कार है। **367. गम्भीराय नमः –** गाम्भीर्य से युक्त अथवा ज्ञान, ऐश्वर्य तथा बल आदि से गम्भीर को नमस्कार है। **368. वृषवाहनाय नमः –** नन्दी नामक वृष पर सवार होनेवाले को नमस्कार है।

369. इष्टाय नमः – परमानन्द होने से सर्वप्रिय अथवा यज्ञ से पूजित को नमस्कार है। **370. अविशिष्टाय नमः –** सम्पूर्ण विशेषणों से रहित को नमस्कार है। **371. शिष्टेष्टाय नमः –** शिष्ट पुरुषों के इष्टदेव को नमस्कार है। **372. सुलभाय नमः –** निरन्तर स्मरण करनेवाले भक्तों के लिये सुगमता से प्राप्य को नमस्कार है। **373. सारशोधनाय नमः –** सारतत्त्व की खोज करनेवाले को नमस्कार है। **374. तीर्थरूपाय नमः –** तीर्थस्वरूप अथवा सर्वविद्यास्वरूप को नमस्कार है। **375. तीर्थनाम्ने नमः –** तीर्थनामधारी अथवा जिनका नाम भवसागर से पार लगानेवाला है उसे नमस्कार है। **376. तीर्थदृश्याय नमः –** तीर्थसेवन से अपने स्वरूप का दर्शन करानेवाले अथवा गुरुकृपा से प्रत्यक्ष होनेवाले को नमस्कार है। **377. तीर्थदाय नमः –** चरणोदकस्वरूप तीर्थ को देनेवाले को नमस्कार है।

378. अपांनिधये नमः – जल के निधान समुद्ररूप को नमस्कार है। **379. अधिष्ठानाय नमः –** उपादानकारणरूप से सब भूतों के आश्रय अथवा जगत्‌रूप प्रपञ्च के आधार को नमस्कार है। **380. दुर्जयाय नमः –** जिनको जीतना कठिन है, उनको नमस्कार है। **381. जयकालविदे नमः –** विजय के अवसर को समझनेवाले अर्थात् असुरादिकों के नाश और देवताओं के जय के समय को जाननेवाले को नमस्कार है। **382. प्रतिष्ठिताय नमः –** अपनी महिमा में स्थित को नमस्कार है। **383. प्रमाणज्ञाय नमः –** प्रमाणों के ज्ञाता को नमस्कार है। **384. हिरण्यकवचाय नमः –** सुवर्णमय कवच धारण करनेवाले को नमस्कार है। **385. हरये नमः –** सब पापों को हरनेवाले अथवा श्रीहरिस्वरूप को नमस्कार है।

386. विमोचनाय नमः – संसारबंधन से सदा के लिये छुड़ा देनेवाले को नमस्कार है। **387. सुरगणाय नमः –** सर्वदेवात्मक या देवसमुदायरूप को नमस्कार है। **388. विद्येशाय नमः –** सम्पूर्ण विद्याओं के स्वामी को नमस्कार है। **389. विन्दुसंश्रयाय नमः –** बिन्दुरूप प्रणव के आश्रय या प्रणव के आत्मा को नमस्कार है। **390. बालरूपाय नमः –** बालक का रूप धारण करनेवाले को नमस्कार है। **391. अबलोन्मत्ताय नमः –** बल से उन्मत्त न होनेवाले को नमस्कार है। **392. अविकर्त्रे नमः –** विकाररहित को नमस्कार है। **393. गहनाय नमः –** दुर्बोधस्वरूप या अगम्य को नमस्कार है। **394. गुहाय नमः –** माया से अपने यथार्थ स्वरूप को छिपाये रखनेवाले को नमस्कार है।

395. करणाय नमः – संसार की उत्पत्ति के सबसे बड़े साधन को नमस्कार है। **396. कारणाय नमः –** जगत् के उपादान एवं निमित्त कारण को नमस्कार है। **397. कर्त्रे नमः –** सबके रचयिता को नमस्कार है। **398. सर्वबन्धविमोचनाय नमः –** सम्पूर्ण बन्धनों से छुड़ानेवाले को नमस्कार है। **399. व्यवसायाय नमः –** निश्चयात्मक ज्ञानस्वरूप को नमस्कार है। **400. व्यवस्थानाय नमः –** सम्पूर्ण जगत् की व्यवस्था करनेवाले को नमस्कार है। **401. स्थानदाय नमः –** कर्मानुसार सबको स्थान देनेवाले या ध्रुव आदि भक्तों को अविचल स्थिति देनेवाले को नमस्कार है। **402. जगदादिजाय नमः –** (हिरण्यगर्भरूप से)जगत् के आदि में प्रकट होनेवाले को नमस्कार है।

403. गुरुदाय नमः – श्रेष्ठ वस्तु प्रदान करनेवाले अथवा जिज्ञासुओं को गुरु की प्राप्ति करानेवाले

को नमस्कार है। **404. ललिताय नमः –** सुन्दर स्वरूपवाले को नमस्कार है। **405. अभेदाय नमः –** भेदरहित अथवा अद्वैतस्वरूप को नमस्कार है। **406. भावात्माऽऽत्मनि संस्थिताय नमः –** सत्स्वरूप आत्मा में प्रतिष्ठित को नमस्कार है। **407. वीरेश्वराय नमः –** वीरशिरोमणि को नमस्कार है। **408. वीरभद्राय नमः –** वीरभद्रनामक गणाध्यक्ष को नमस्कार है। **409. वीरासनविधये नमः –** वीरासन से बैठनेवाले को नमस्कार है। **410. विराजे नमः –** अखिल ब्रह्माण्डस्वरूप को नमस्कार है।

411. वीरचूडामणये नमः – वीरों में श्रेष्ठ को नमस्कार है। **412. वेत्त्रे नमः –** विद्वान् या सर्वज्ञ को नमस्कार है। **413. चिदानन्दाय नमः –** विज्ञानान्दस्वरूप को नमस्कार है। **414. नदीधराय नमः –** मस्तक पर गंगाजी को धारण करनेवाले को नमस्कार है। **415. आज्ञाधाराय नमः –** आज्ञा का पालन करनेवाले या जगत् के नियमों के आधार को नमस्कार है। **416. त्रिशूलिने नमः –** त्रिशूल नामक आयुध को धारण करनेवाले अथवा तीनों प्रकार के दुःखों का नाश करनेवाले को नमस्कार है। **417. शिपिविष्टाय नमः –** तेजोमयी किरणों से व्याप्त अथवा यज्ञ में विष्णुरूप से स्थित को नमस्कार है। **418. शिवालयाय नमः –** भगवती शिवा के आश्रय अथवा कल्याणयुक्त स्थानवाले को नमस्कार है।

419. वालखिल्याय नमः – वालखिल्य ऋषिरूप को नमस्कार है। **420. महाचापाय नमः –** महान् धनुर्धर को नमस्कार है। **421. तिग्मांशवे नमः –** सूर्यरूप को नमस्कार है। **422. बधिराय नमः –** लौकिक विषयों की चर्चा न सुननेवाले अथवा(श्रोत्र) इन्द्रियरहित को नमस्कार है। **423. खगाय नमः –** आकाश में विचरण करनेवाले को नमस्कार है। **424. अभिरामाय नमः –** परम सुन्दर अथवा जिसमें सब प्रकार के योगी रमण करते हैं उसको नमस्कार है। **425. सुशरणाय नमः –** सबके लिये सुन्दर आश्रयरूप को नमस्कार है। **426. सुब्रह्मण्याय नमः –** वेदज्ञानवेत्ता का हित करनेवाले को नमस्कार है। **427. सुधापतये नमः –** अमृतकलश के रक्षक अथवा अमृत के स्वामी को नमस्कार है।

428. मघवत्कौशिकाय नमः – कुशिकवंशीय इन्द्रस्वरूप को नमस्कार है। **429. गोमते नमः –** प्रकाशकिरणों से युक्त अथवा जिसके संसाररूप गौ हैं उसे नमस्कार है। **430. विरामाय नमः –** समस्त प्राणियों के लय के स्थान को नमस्कार है। **431. सर्वसाधनाय नमः –** समस्त कामनाओं या पुरुषार्थों को सिद्ध करनेवाले को नमस्कार है। **432. ललाटाक्षाय नमः –** ललाट में तीसरा नेत्र धारण करनेवाले को नमस्कार है। **433. विश्वदेहाय नमः –** जगत्स्वरूप को नमस्कार है। **434. साराय नमः –** सारतत्त्वरूप या प्रलय में भी स्थिर रहनेवाले को नमस्कार है। **435. संसारचक्रभृते नमः –** संसारचक्र को धारण करनेवाले को नमस्कार है।

436. अमोघदण्डाय नमः – जिनका दण्ड कभी व्यर्थ नहीं जाता उसे नमस्कार है। **437. मध्यस्थाय नमः –** उदासीन अथवा न्याय में पक्षपातरहितरूप से स्थित को नमस्कार है। **438. हिरण्याय नमः –** सुवर्ण अथवा तेजःस्वरूप को नमस्कार है। **439. ब्रह्मवर्चसे नमः –** ब्रह्मतेज से सम्पन्न अथवा

जिससे ब्रह्मा प्रकाशित होते हैं उसे नमस्कार है। **440. परमार्थाय नमः –** मोक्षस्वरूप उत्कृष्ट अर्थ की प्राप्ति करानेवाले को नमस्कार है। **441. परमायिने नमः –** महामायावी अथवा उत्कृष्ट मायावाले को नमस्कार है। **442. शम्बराय नमः –** कल्याणप्रद को नमस्कार है। **443. व्याघ्रलोचनाय नमः –** व्याघ्र के समान भयानक नेत्रोंवाले को नमस्कार है।

444. रुचये नमः – दीप्तिरूप को नमस्कार है। **445. विरञ्चये नमः –** ब्रह्मस्वरूप को नमस्कार है। **446. स्वर्बन्धवे नमः –** स्वर्लोक में बन्धु के समान सुखद को नमस्कार है। **447. वाचस्पतये नमः –** वाणी के अधिपति अथवा विद्याओं के स्वामी को नमस्कार है। **448. अहस्पतये नमः –** दिन के स्वामी सूर्यरूप को नमस्कार है। **449. रवये नमः –** समस्त रसों का शोषण करनेवाले को नमस्कार है। **450. विरोचनाय नमः –** विविध प्रकार से प्रकाश फैलानेवाले को नमस्कार है। **451. स्कन्दाय नमः –** स्वामी कार्तिकेयरूप को नमस्कार है। **452. शास्तृवैवश्वतयमाय नमः –** सब पर शासन करनेवाले सूर्यकुमार यम के समान जो है उसको नमस्कार है।

453. युक्त्युन्नतकीर्तये नमः – अष्टांगयोगस्वरूप तथा ऊर्ध्वलोक में फैली हुई कीर्ति से युक्त को नमस्कार है। **454. सानुरागाय नमः –** भक्तजनों पर प्रेम रखनेवाले को नमस्कार है। **455. परंजयाय नमः –** दूसरों (शत्रुओं) पर विजय पानेवाले को नमस्कार है। **456. कैलासाधिपतये नमः –** कैलास के स्वामी को नमस्कार है। **457. कान्ताय नमः –** कमनीय या कान्तिमान् को नमस्कार है। **458. सवित्रे नमः –** समस्त जगत् को उत्पन्न करनेवाले को नमस्कार है। **459. रविलोचनाय नमः –** सूर्यरूप नेत्रवाले को नमस्कार है।

460. विद्वत्तमाय नमः – विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ अथवा अतिशय ज्ञानवाले को नमस्कार है। **461. वीतभयाय नमः –** सब प्रकार के भय से रहित को नमस्कार है। **462. विश्वभर्त्रे नमः –** जगत् का भरण-पोषण करनेवाले को नमस्कार है। **463. अनिवारिताय नमः –** जिन्हें कोई रोक नहीं सकता उसे नमस्कार है। **464. नित्याय नमः –** उत्पत्ति एवं नाशरहित को नमस्कार है। **465. नियतकल्याणाय नमः –** सुनिश्चितरूप से कल्याणकारी को नमस्कार है। **466. पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः –** जिनके नाम, गुण, महिमा और स्वरूप के श्रवण तथा कीर्तन परम पावन हैं उसे नमस्कार है।

467. दूरश्रवसे नमः – सर्वव्यापी होने के कारण दूर की बात भी सुन लेनेवाले को नमस्कार है। **468. विश्वसहाय नमः –** भक्तजनों के सब अपराधों को कृपापूर्वक सह लेनेवाले को नमस्कार है। **469. ध्येयाय नमः –** ध्यान या विचार के योग्य को नमस्कार है। **470. दुःस्वप्ननाशनाय नमः –** होनेवाले दुःस्वप्नों के नाश करनेवाले को नमस्कार है। **471. उत्तारणाय नमः –** संसारसागर से पार उतारनेवाले को नमस्कार है। **472. दुष्कृतिघ्ने नमः –** पापों या पापियों का नाश करनेवाले को नमस्कार है। **473. विज्ञेयाय नमः –** जानने के योग्य को नमस्कार है। **474. दुस्सहाय नमः –** जिनके वेग को सहन करना दूसरों के लिये अत्यन्त कठिन है उसे नमस्कार है। **475. अभवाय नमः –** संसारबंधन से रहित अथवा अजन्मा को नमस्कार है।

476. अनादये नमः – जिसका कोई प्रारंभ नहीं है ऐसे कारणस्वरूप को नमस्कार है। **477. भूर्भुवोलक्ष्म्यै नमः –** भूर्लोक और भुवर्लोक की शोभा को नमस्कार है। **478. किरीटिने नमः –** मुकुटधारी को नमस्कार है। **479. त्रिदशाधिपाय नमः –** देवताओं के स्वामी को नमस्कार है। **480. विश्वगोप्त्रे नमः –** जगत् के रक्षक को नमस्कार है। **481. विश्वकर्त्रे नमः –** संसार की सृष्टि करनेवाले को नमस्कार है। **482. सुवीराय नमः –** श्रेष्ठ वीर को नमस्कार है। **483. रुचिराङ्गदाय नमः –** भुजाओं में सुन्दर बाजूबंद धारण करनेवाले को नमस्कार है।

484. जननाय नमः – प्राणियों को जन्म देनेवाले को नमस्कार है। **485. जनजन्मादये नमः –** जन्म लेनेवालों के जन्म के मूल कारण को नमस्कार है। **486. प्रीतिमते नमः –** प्रसन्नता से युक्त को नमस्कार है। **487. नीतिमते नमः –** सदा नीतिपरायण को नमस्कार है। **488. धवाय नमः –** सबके स्वामी को नमस्कार है। **489. वसिष्ठाय नमः –** मन एवं इन्द्रियों को अत्यन्त वश में रखनेवाले अथवा वसिष्ठऋषिरूप को नमस्कार है। **490. कश्यपाय नमः –** द्रष्टा अथवा कश्यप मुनिरूप को नमस्कार है। **491. भानवे नमः –** प्रकाशमान अथवा सूर्यरूप को नमस्कार है। **492. भीमाय नमः –** दुष्टों को भय देनेवाले को नमस्कार है। **493. भीमपराक्रमाय नमः –** अतिशय भयदायक पराक्रम से युक्त को नमस्कार है।

494. प्रणवाय नमः – ओंकारस्वरूप को नमस्कार है। **495. सत्पथाचाराय नमः –** सत्पुरुषों के मार्ग पर चलनेवाले को नमस्कार है। **496. महाकोशाय नमः –** अन्नमयादि पाँचों कोशों को अपने भीतर धारण करने के कारण महाकोशरूप को नमस्कार है। **497. महाधनाय नमः –** अपरिमित ऐश्वर्यवाले अथवा कुबेर को भी धन देने के कारण महाधनवान् को नमस्कार है। **498. जन्माधिपाय नमः –** जन्म या उत्पत्ति रूपी कार्य के स्वामी ब्रह्मारूप को नमस्कार है। **499. महादेवाय नमः –** सर्वोत्कृष्ट देवता को नमस्कार है। **500. सकलागमपारगाय नमः –** समस्त शास्त्रों के पारंगत विद्वान् को नमस्कार है।

501. तत्त्वाय नमः – यथार्थ तत्त्वरूप अथवा ब्रह्मस्वरूप को नमस्कार है। **502. तत्त्वविदे नमः –** यथार्थ तत्त्व को पूर्णतया जाननेवाले को नमस्कार है। **503. एकात्मने नमः –** अद्वितीय आत्मरूप को नमस्कार है। **504. विभवे नमः –** सर्वत्र व्यापक तत्त्व को नमस्कार है। **505. विश्वविभूषणाय नमः –** सम्पूर्ण जगत् को उत्तम गुणों से विभूषित करनेवाले अथवा जगत् जिसका भूषण है उसे नमस्कार है। **506. ऋषये नमः –** मन्त्रद्रष्टा अथवा इन्द्रियागोचर के दर्शक को नमस्कार है। **507. ब्राह्मणाय नमः –** ब्रह्मवेत्ता को नमस्कार है। **508. ऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगाय नमः –** ऐश्वर्य, जन्म, मृत्यु और बुढ़ापा से अतीत को नमस्कार है।

509. पञ्चयज्ञसमुत्पत्तये नमः – पञ्च महायज्ञों की उत्पत्ति के हेतु को नमस्कार है। **510. विश्वेशाय नमः –** विश्वनाथ या समस्त जगत् के ईश्वर को नमस्कार है। **511. विमलोदयाय नमः –** निर्मल अभ्युदय की प्राप्ति करानेवाले धर्मरूप अथवा जिनसे मंगल का उदय होता है, उसे नमस्कार है। **512. आत्मयोनये नमः –** स्वयम्भू को नमस्कार है। **513. अनाद्यन्ताय नमः –** आदि-अन्त से रहित को नमस्कार है। **514.**

वत्सलाय नमः – सबके प्यारे अथवा भक्तों के प्रति वात्सल्य स्नेह से युक्त को नमस्कार है। **515. भक्तलोकधृशे नमः –** भक्जनों के आश्रय को नमस्कार है।

516. गायत्रीवल्लभाय नमः – गायत्रीमन्त्र के प्रेमी को नमस्कार है। **517. प्रांशवे नमः –** ऊँचे शरीरवाले को नमस्कार है। **518. विश्वावासाय नमः –** सम्पूर्ण जगत् के आवासस्थान को नमस्कार है। **519. प्रभाकराय नमः –** सूर्यरूप अथवा अत्यन्त दीप्ति करनेवाले को नमस्कार है। **520. शिशवे नमः –** बालकरूप धारण करनेवाले को नमस्कार है। **521. गिरिरताय नमः –** कैलास पर्वत पर रमण करनेवाले को नमस्कार है। **522. सम्राज्ञे नमः –** सबके अधिपति व नियन्ता को नमस्कार है। **523. सुषेणसुरशत्रुघ्ने नमः –** प्रमथगणों की सुन्दर सेना से युक्त तथा देवशत्रुओं का संहार करनेवाले को नमस्कार है।

524. अमोघारिष्टनेमये नमः – अमोघ संकल्पवाले महर्षि कश्यपरूप को नमस्कार है। **525. कुमुदाय नमः –** भूतल को आह्लाद प्रदान करनेवाले चन्द्रमारूप को नमस्कार है। **526. विगतज्वराय नमः –** चिन्तारहित अथवा जो सब तापों से रहित हो उसे नमस्कार है। **527. स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिषे नमः –** अपने ही प्रकाश से प्रकाशित होनेवाले सूक्ष्मज्योतिःस्वरूप को नमस्कार है। **528. आत्मज्योतिषे नमः –** अपने स्वरूपभूत ज्ञान की प्रभा से प्रकाशित को नमस्कार है। **529. अचञ्चलाय नमः –** चंचलता से रहित को नमस्कार है।

530. पिङ्गलाय नमः – पिङ्गलवर्णवाले को नमस्कार है। **531. कपिलश्मश्रवे नमः –** कपिल वर्ण की दाढ़ी-मूँछ रखनेवाले दुर्वासा के रूप में अवतीर्ण को नमस्कार है। **532. भालनेत्राय नमः –** ललाट में तृतीय नेत्र धारण करनेवाले को नमस्कार है। **533. त्रयीतनवे नमः –** तीनों लोक या तीनों वेद जिनके स्वरूप हैं उन्हें नमस्कार है। **534. ज्ञानस्कन्दमहानीतये नमः –** ज्ञान के पुञ्ज अथवा ज्ञानप्रद और श्रेष्ठ नीतिवाले को नमस्कार है। **535. विश्वोत्पत्तये नमः –** जगत् के उत्पादक को नमस्कार है। **536. उपप्लवाय नमः –** संहारकारी अथवा जिनसे दुष्ट पीड़ित होते हैं, उन्हें नमस्कार है।

537. भगविवस्वनादित्याय नमः – अदितिनन्दन भग एवं विवस्वान्रूप को नमस्कार है। **538. योगपाराय नमः –** योगविद्या में पारंगत को नमस्कार है। **539. दिवस्पतये नमः –** स्वर्गलोक के स्वामी अथवा इन्द्रस्वरूप को नमस्कार है। **540. कल्याणगुणनाम्ने नमः –** कल्याणकारी गुण एवं नामवाले को नमस्कार है। **541. पापघ्ने नमः –** पापनाशक को नमस्कार है। **542. पुण्यदर्शनाय नमः –** पुण्यजनक दर्शनवाले अथवा पुण्य से ही जिनका दर्शन होता है, उन्हें नमस्कार है।

543. उदारकीर्तये नमः – उत्तम कीर्तिवाले को नमस्कार है। **544. उद्योगिने नमः –** सृष्टि आदि करने में उद्योगशील को नमस्कार है। **545. सद्योगिने नमः –** श्रेष्ठ योगी अथवा नित्य योगयुक्त को नमस्कार है। **546. सदसन्मयाय नमः –** सदसत्स्वरूप या जगत्स्वरूप को नमस्कार है। **547. नक्षत्रमालिने नमः –** नक्षत्रों की माला से अलंकृत आकाशरूप को नमस्कार है। **548. नाकेशाय नमः –** स्वर्ग के स्वामी को नमस्कार है। **549. स्वाधिष्ठानपदाश्रयाय नमः –** स्वाधिष्ठान चक्र के आश्रय अथवा अपने स्वरूप में स्थित

रहनेवालों के आधारभूत को नमस्कार है।

550. पवित्रपापहारिणे नमः – नित्य शुद्ध एवं पापनाशक को नमस्कार है। **551. मणिपूराय नमः –** मणिपूर नामक चक्रस्वरूप अथवा रत्नादिकों (मणियों) से भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाले को नमस्कार है। **552. नभोगतये नमः –** आकाशचारी को नमस्कार है। **553. हृत्पुण्डरीकासीनाय नमः –** हृदयकमल में स्थित को नमस्कार है। **554. शक्राय नमः –** इन्द्ररूप को नमस्कार है। **555. शान्ताय नमः –** शान्तस्वरूप को नमस्कार है। **556. वृषाकपये नमः –** हरिहर या धर्म की स्थिरता के कारण को नमस्कार है।

557. उष्णाय नमः – हालाहल विष की गर्मी से उष्णतायुक्त को नमस्कार है। **558. गृहपतये नमः –** समस्त ब्रह्माण्डरूपी गृह के स्वामी अथवा गृहपतिरूप में अवतार लेनेवाले को नमस्कार है। **559. कृष्णाय नमः –** सच्चिदानन्दस्वरूप को नमस्कार है। **560. समर्थाय नमः –** सामर्थ्यशाली को नमस्कार है। **561. अनर्थनाशनाय नमः –** अनर्थ का नाश करनेवाले या संसार के दुःख को हरनेवाले को नमस्कार है। **562. अधर्मशत्रवे नमः –** अधर्मनाशक या पापियों का नाश करनेवाले को नमस्कार है। **563. अज्ञेयाय नमः –** बुद्धि की पहुँच से परे अथवा जानने में न आनेवाले को नमस्कार है। **564. पुरुहूतपुरुश्रुताय नमः –** बहुत-से नामों द्वारा पुकारे और सुने जानेवाले अथवा बहुतों द्वारा उपासित तथा बहुत से गुरुओं द्वारा श्रवण होनेवाले को नमस्कार है।

565. ब्रह्मगर्भाय नमः – ब्रह्मा जिनके गर्भस्थ शिशु के समान हैं अथवा जिनके गर्भ में वेद हैं उन्हें नमस्कार है। **566. बृहद्गर्भाय नमः –** विश्वब्रह्माण्ड प्रलयकाल में जिनके गर्भ में रहता है उसे नमस्कार है। **567. धर्मधेनवे नमः –** धर्मरूपी वृषभ को उत्पन्न करने के लिये धेनुस्वरूप या धर्मोत्पत्ति के स्थान को नमस्कार है। **568. धनागमाय नमः –** सभी प्रकार के धन की प्राप्ति करानेवाले को नमस्कार है। **569. जगद्धितैषिणे नमः –** समस्त संसार का हित चाहनेवाले को नमस्कार है। **570. सुगताय नमः –** उत्तम ज्ञान से सम्पन्न अथवा बुद्धस्वरूप को नमस्कार है। **571. कुमाराय नमः –** कार्तिकेयरूप या बालस्वरूप अथवा जिनसे कामदेव पराजित हुआ उसे नमस्कार है। **572. कुशलागमाय नमः –** कल्याणदाता को नमस्कार है।

573. हिरण्यवर्णज्योतिष्मते नमः – सुवर्ण के समान वर्णवाले तथा तेजस्वी को नमस्कार है। **574. नानाभूतरताय नमः –** नाना प्रकार के भूतों के साथ क्रीड़ा करनेवाले को नमस्कार है। **575. ध्वनये नमः –** नादस्वरूप को नमस्कार है। **576. अरागाय नमः –** आसक्तिरहित को नमस्कार है। **577. नयनाध्यक्षाय नमः –** नेत्रों में द्रष्टारूप से विद्यमान को नमस्कार है। **578. विश्वामित्राय नमः –** सम्पूर्ण जगत् के प्रति मैत्री भावना रखनेवाले अथवा विश्वामित्र ऋषिरूप को नमस्कार है। **579. धनेश्वराय नमः –** धन के स्वामी कुबेररूप को नमस्कार है।

580. ब्रह्मज्योतिषे नमः – ज्योतिःस्वरूप ब्रह्म या सबके प्रकाशक ब्रह्म को नमस्कार है। **581. वसुधाम्ने नमः –** सुवर्ण और रत्नों के तेज से प्रकाशित अथवा वसुधास्वरूप को नमस्कार है। **582. महाज्योतिरनुत्तमाय नमः –** सूर्यादि ज्योतियों के प्रकाशक सर्वोत्तम महाज्योतिःस्वरूप अथवा महातेजस्वी होने

से सबसे उत्कृष्ट को नमस्कार है। **583. मातामहाय नमः –** मातृकाओं के जन्मदाता होने के कारण मातामह अथवा जगत् की माया के पिता को नमस्कार है। **584. मातरिश्वनभस्वते नमः –** आकाश में विचरनेवाले वायुदेव को नमस्कार है। **585. नागहारधृशे नमः –** सर्पमय हार धारण करनेवाले को नमस्कार है।

586. पुलस्त्याय नमः – पुलस्त्य नामक मुनि को नमस्कार है। **587. पुलहाय नमः –** पुलह नामक ऋषि को नमस्कार है। **588. अगस्त्याय नमः –** अगस्त्य नामक ऋषि को नमस्कार है। **589. जातूकर्ण्याय नमः –** जातूकर्ण्य नामक ऋषि को नमस्कार है। **590. पराशराय नमः –** शक्ति के पुत्र तथा व्यासजी के पिता मुनिवर पराशर को नमस्कार है। **591. निरावरणनिर्वाराय नमः –** आवरणशून्य तथा अवरोधरहित को नमस्कार है। **592. वैरञ्च्याय नमः –** ब्रह्माजी के पुत्र नीललोहित रुद्र को नमस्कार है। **593. विष्टरश्रवसे नमः –** विस्तृत यशवाले विष्णुरूप को नमस्कार है।

594. आत्मभुवे नमः – स्वयम्भू ब्रह्मा अथवा स्वयंप्रकाश को नमस्कार है। **595. अनिरुद्धाय नमः –** अकुण्ठित गतिवाले को नमस्कार है। **596. अत्रये नमः –** अत्रि नामक ऋषि अथवा त्रिगुणातीत को नमस्कार है। **597. ज्ञानमूर्तये नमः –** ज्ञानस्वरूप को नमस्कार है। **598. महायशसे नमः –** महायशस्वी को नमस्कार है। **599. लोकवीराग्रणये नमः –** विश्वविख्यात वीरों जैसे विष्णु आदि में अग्रगण्य को नमस्कार है। **600. वीराय नमः –** शूरवीर को नमस्कार है। **601. चण्डाय नमः –** प्रलय के समय अत्यन्त क्रोध करनेवाले अथवा दुष्टों पर महाक्रोध करनेवाले को नमस्कार है। **602. सत्यपराक्रमाय नमः –** सच्चे पराक्रमी को नमस्कार है।

603. व्यालाकल्पाय नमः – सर्पों के आभूषण से शृंगार करनेवाले को नमस्कार है। **604. महाकल्पाय नमः –** महाकल्पसंज्ञक कालस्वरूपवाले या महासमर्थ को नमस्कार है। **605. कल्पवृक्षाय नमः –** भक्तों के मनोरथ पूरा करने के लिये कल्पवृक्ष के समान उदार को नमस्कार है। **606. कलाधराय नमः –** चन्द्रकलाधारी को नमस्कार है। **607. अलंकरिष्णवे नमः –** अलंकार धारण करने या करानेवाले को नमस्कार है। **608. अचलाय नमः –** विचलित न होनेवाले को नमस्कार है। **609. रोचिष्णवे नमः –** प्रकाशमान को नमस्कार है। **610. विक्रमोन्नताय नमः –** पराक्रम में बढ़े-चढ़े को नमस्कार है।

611. आयुश्शब्दपतये नमः – आयु और वाणी के स्वामी अथवा सब प्राणियों की आयु और वेदवाणी के नियन्ता को नमस्कार है। **612. वेगिप्लवनाय नमः –** शीघ्रता से भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाले अथवा वेगशाली तथा कूदने या तैरनेवाले को नमस्कार है। **613. शिखिसारथये नम –** अग्निरूप (से सहायक) या अग्निसहायवान् को नमस्कार है। **614. असंसृष्टाय नमः –** निर्लेप या माया के संसर्ग से रहित को नमस्कार है। **615. अतिथये नमः –** भक्तों की अतिथिरूप से पूजा ग्रहण करनेवाले को नमस्कार है। **616. शक्रप्रमाथिने नमः –** इन्द्र का मानमर्दन करनेवाले को नमस्कार है। **617. पादपासनाय नमः –** वृक्षों पर या वृक्षों के नीचे आसन लगानेवाले को नमस्कार है।

618. वसुश्रवसे नमः – यशरूपी धन से सम्पन्न या जिनका श्रवण मधुर है उसको नमस्कार है। **619.**

हव्यवाहाय नमः – देवताओं के हवि पहुँचानेवाले अग्निस्वरूप को नमस्कार है। **620. प्रतप्ताय नमः** – सूर्य रूप से प्रचण्ड ताप देनेवाले अथवा कठिन तप करनेवाले को नमस्कार है। **621. विश्वभोजनाय नमः** – प्रलयकाल में विश्व-ब्रह्माण्ड को अपना ग्रास बना लेनेवाले को नमस्कार है। **622. जप्याय नमः** – जपे जाने योग्य अथवा उपासना करने योग्य को नमस्कार है। **623. जरादिशमनाय नमः** – बुढ़ापा आदि दोषों का निवारण करनेवाले को नमस्कार है। **624. लोहितात्मतनूनप्त्रे नमः** – लोहित वर्णवाले अग्निरूप को नमस्कार है।

625. बृहदश्वाय नमः – विशाल अश्ववाले को नमस्कार है। **626. नभोयोनये नमः** – आकाश की उत्पत्ति के कारण या स्थान को नमस्कार है। **627. सुप्रतीकाय नमः** – सुन्दर शरीरवाले को नमस्कार है। **628. तमिस्रघ्ने नमः** – अज्ञान के अंधकार को दूर करनेवाले को नमस्कार है। **629. निदाघतपनाय नमः** – तपनेवाले ग्रीष्मरूप को नमस्कार है। **630. मेघाय नमः** – बादलों से उपलक्षित वर्षारूप को नमस्कार है। **631. स्वक्षाय नमः** – सुन्दर नेत्रोंवाले को नमस्कार है। **632. परपुरंजयाय नमः** – शत्रुओं के पुर को जीतनेवाले या त्रिपुररूप शत्रुनगरी पर विजय पानेवाले को नमस्कार है।

633. सुखानिलाय नमः – सुखदायक वायु को प्रकट करनेवाले को नमस्कार है। **634. सुनिष्पन्नाय नमः** – जिसमें अन्न का सुन्दररूप से परिपाक होता है वह हेमन्तकालरूप अथवा जिनसे सुन्दर जगत् उत्पन्न हुआ है उसे नमस्कार है। **635. सुरभिशिशिरात्मकाय नमः** – सुगन्धित मलयानिल से युक्त शिशिर ऋतुरूप को नमस्कार है। **636. वसन्तमाधवाय नमः** – मकरन्दयुक्त वसन्त ऋतुरूप अथवा चैत्र-वैशाख मासों से युक्त वसन्तरूप को नमस्कार है। **637. ग्रीष्माय नमः** – ग्रीष्म ऋतुरूप को नमस्कार है। **638. नभस्याय नमः** – भाद्रपदमासरूप को नमस्कार है। **639. बीजवाहनाय नमः** – धान आदि के बीजों की प्राप्ति करानेवाले शरत्कालरूप को नमस्कार है।

640. अङ्गिरोगुरवे नमः – अंगिरा नामक ऋषि तथा उनके पुत्र देवगुरु बृहस्पति को नमस्कार है। **641. आत्रेयाय नमः** – अत्रिकुमार दुर्वासा को नमस्कार है। **642. विमलाय नमः** – निर्मल स्वरूप को नमस्कार है। **643. विश्ववाहनाय नमः** – सम्पूर्ण जगत् का निर्वाह करानेवाले को नमस्कार है। **644. पावनाय नमः** – पवित्र करनेवाले अथवा पाप का नाश करनेवाले को नमस्कार है। **645. सुमतिविदुषे नमः** – उत्तम बुद्धिवाले विद्वान् को नमस्कार है। **646. त्रैविद्याय नमः** – तीनों वेदों के विद्वान् अथवा तीनों वेदों द्वारा प्रतिपादित को नमस्कार है। **647. वरवाहनाय नमः** – वृषभरूप श्रेष्ठ वाहनवाले को नमस्कार है।

648. मनोबुद्ध्यहंकाराय नमः – मन, बुद्धि और अहंकारस्वरूप को नमस्कार है। **649. क्षेत्रज्ञाय नमः** – आत्मा को नमस्कार है। **650. क्षेत्रपालकाय नमः** – शरीररूपी क्षेत्र का पालन करनेवाले परमात्मा अथवा सिद्धक्षेत्रों के रक्षक को नमस्कार है। **651. जमदग्नये नमः** – जमदग्नि ऋषिस्वरूप को नमस्कार है। **652. बलनिधये नमः** – अनन्त बल के सागर अथवा सब शक्तियों के अधिष्ठानस्वरूप को नमस्कार है। **653. विगालाय नमः** – अपनी जटा से गंगाजी के जल को टपकानेवाले अथवा विशेष करके मोक्षरूपी अमृत को टपकानेवाले को नमस्कार है। **654. विश्वगालवाय नमः** – विश्वविख्यात गालव मुनि अथवा प्रलयकाल

में कालाग्निस्वरूप से जगत् को निगल जानेवाले को नमस्कार है।

655. अघोराय नमः – सौम्यरूपवाले को नमस्कार है। **656. अनुत्तराय नमः –** सर्वश्रेष्ठ को नमस्कार है। **657. यज्ञश्रेष्ठाय नमः –** श्रेष्ठ यज्ञरूप को नमस्कार है। **658. निःश्रेयसप्रदाय नमः –** कल्याणदाता अथवा मोक्षदाता को नमस्कार है। **659. शैलाय नमः –** शिलामय लिंगरूप अथवा नर्मदा में से उत्पन्न नर्मदेश्वर लिंगरूप को नमस्कार है। **660. गगनकुन्दाभाय नमः –** आकाशकुन्द-चन्द्रमा के समान गौर कान्तिवाले को नमस्कार है। **661. दानवारिणे नमः –** दानव-शत्रु को नमस्कार है। **662. अरिन्दमाय नमः –** (भक्तों के) शत्रुओं का दमन करनेवाले को नमस्कार है।

663. रजनीजनकचारवे नमः – सुन्दर निशाकर रूप को नमस्कार है। **664. निःशल्याय नमः –** निष्कण्टक को नमस्कार है। **665. लोकशल्यधृशे नमः –** शरणागतजनों के शोकरूपी कांटे को निकाल कर स्वयं धारण करनेवाले को नमस्कार है। **666. चतुर्वेदाय नमः –** चारों वेदों के द्वारा जानने योग्य अथवा चारों वेदों के जनक को नमस्कार है। **667. चतुर्भावाय नमः –** चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति करानेवाले को नमस्कार है। **668. चतुरचतुरप्रियाय नमः –** चतुर एवं चतुर पुरुषों के प्रिय को नमस्कार है।

669. आम्नायाय नमः – वेदस्वरूप को नमस्कार है। **670. समाम्नायाय नमः –** अक्षरसमाम्नाय शिवसूत्ररूप को नमस्कार है। **671. तीर्थदेवशिवालयाय नमः –** तीर्थों के देवता और शिवालयरूप अथवा तीर्थ के देवता के कल्याणस्थान को नमस्कार है। **672. बहुरूपाय नमः –** अनेक रूपवाले अथवा असंख्य रूपवाले को नमस्कार है। **673. महारूपाय नमः –** विराटरूपधारी अथवा जिसके पूजनीय रूप हैं उन्हें नमस्कार है। **674. सर्वरूपचराचराय नमः –** चर और अचर सम्पूर्ण रूपवाले को नमस्कार है।

675. न्यायनिर्मायकन्यायिने नमः – न्यायकर्त्ता तथा न्यायशील को नमस्कार है। **676. न्यायगम्याय नमः –** न्याययुक्त आचरण से प्राप्त होने योग्य को नमस्कार है। **677. निरञ्जनाय नमः –** निर्मलरूप को नमस्कार है। **678. सहस्रमूर्ध्ने नमः –** सहस्रों अथवा असंख्य शिरवाले को नमस्कार है। **679. देवेन्द्राय नमः –** देवताओं के स्वामी को नमस्कार है। **680. सर्वशस्त्रप्रभञ्जनाय नमः –** (विपक्षी योद्धा के) सम्पूर्ण शस्त्रों को नष्ट कर देनेवाले को नमस्कार है।

681. मुण्डाय नमः – मुँड़े हुए सिरवाले संन्यासी अथवा लुञ्चित केशरूप को नमस्कार है। **682. विरूपाय नमः –** विविध रूपवाले अथवा सबसे श्रेष्ठ रूपवान् को नमस्कार है। **683. विक्रान्ताय नमः –** विक्रमशील को नमस्कार है। **684. दण्डिने नमः –** कालदण्ड धारण करनेवाले या दण्डधारी को नमस्कार है। **685. दान्ताय नमः –** मन एवं इन्द्रियों का दमन करनेवाले अथवा जितेन्द्रिय को नमस्कार है। **686. गुणोत्तमाय नमः –** गुणों में सबसे श्रेष्ठ अथवा जिसमें श्रेष्ठ गुण हैं उसे नमस्कार है। **687. पिङ्गलाक्षाय नमः –** पिंगल नेत्रवाले को नमस्कार है। **688. जनाध्यक्षाय नमः –** जीवमात्र के साक्षी को नमस्कार है। **689. नीलग्रीवाय नमः –** नीले रंग की गर्दनवाले को नमस्कार है। **690. निरामयाय नमः –** सभी रोगों से रहित को नमस्कार है।

691. **सहस्रबाहवे नमः** – सहस्रों या असंख्य भुजाओं से युक्त को नमस्कार है। 692. **सर्वेशाय नमः** – सबके स्वामी को नमस्कार है। 693. **शरण्याय नमः** – शरणदाता अथवा शरणागतों के हितैषी को नमस्कार है। 694. **सर्वलोकधृशे नमः** – सम्पूर्ण लोकों को धारण करनेवाले को नमस्कार है। 695. **पद्मासनाय नमः** – (हृदय) कमल के आसन पर विराजमान को नमस्कार है। 696. **परंज्योतिषे नमः** – परम प्रकाशस्वरूप को नमस्कार है। 697. **पारम्पर्य्यफलप्रदाय नमः** – परम्परागत फल की प्राप्ति करानेवाले को नमस्कार है।

698. **पद्मगर्भाय नमः** – अपनी नाभि से कमल को प्रकट करनेवाले विष्णुरूप को नमस्कार है। 699. **महागर्भाय नमः** – विराट् ब्रह्माण्ड को गर्भ में धारण करने के कारण महान् गर्भवाले को नमस्कार है। 700. **विश्वगर्भाय नमः** – सम्पूर्ण जगत् को अपने उदर में धारण करनेवाले को नमस्कार है। 701. **विचक्षणाय नमः** – चतुर को नमस्कार है। 702. **परावरज्ञाय नमः** – सर्वज्ञ अथवा कारण-कार्य के ज्ञाता को नमस्कार है। 703. **वरदाय नमः** – अभीष्ट वर देनेवाले को नमस्कार है। 704. **वरेण्याय नमः** – वरणीय अथवा श्रेष्ठ को नमस्कार है। 705. **महास्वनाय नमः** – डमरू का गम्भीर नाद करनेवाले को नमस्कार है।

706. **देवासुरगुरुदेवाय नमः** – देवताओं तथा असुरों के गुरुदेव एवं आराध्य को नमस्कार है। 707. **देवासुरनमस्कृताय नमः** – देवताओं तथा असुरों द्वारा वन्दित को नमस्कार है। 708. **देवासुरमहामित्राय नमः** – देवताओं तथा असुरों दोनों के बड़े मित्र को नमस्कार है। 709. **देवासुरमहेश्वराय नमः** – देवताओं तथा असुरों के महान् ईश्वर को नमस्कार है।

710. **देवासुरेश्वराय नमः** – देवताओं तथा असुरों के शासक को नमस्कार है। 711. **दिव्याय नमः** – अलौकिक स्वरूपवाले को नमस्कार है। 712. **देवासुरमहाश्रयाय नमः** – देवताओं तथा असुरों के महान् आश्रय को नमस्कार है। 713. **देवदेवमयाय नमः** – देवताओं के लिये भी देवतारूप को नमस्कार है। 714. **अचिन्त्याय नमः** – चिन्तन में न आनेवाले अथवा चित्त की सीमा से परे स्थित को नमस्कार है। 715. **देवदेवात्मसम्भवाय नमः** – देवाधिदेव ब्रह्माजी से रुद्ररूप में उत्पन्न अथवा ब्रह्मादिकों के भी देव जिससे जीवों का प्रादुर्भाव हुआ है, उसे नमस्कार है।

716. **सद्योनये नमः** – सत्पदार्थों की उत्पत्ति के हेतु को नमस्कार है। 717. **असुरव्याघ्राय नमः** – असुरों का विनाश करने के लिये व्याघ्ररूप को नमस्कार है। 718. **देवसिंहाय नमः** – देवताओं में श्रेष्ठ को नमस्कार है। 719. **दिवाकराय नमः** – सूर्यरूप को नमस्कार है। 720. **विबुधाग्रचरश्रेष्ठाय नमः** – देवताओं के नायकों में सर्वश्रेष्ठ को नमस्कार है। 721. **सर्वदेवोत्तमोत्तमाय नमः** – सम्पूर्ण श्रेष्ठ देवताओं के भी शिरोमणि को नमस्कार है।

722. **शिवज्ञानरताय नमः** – अपने स्वरूप के ज्ञान में तत्पर अथवा कल्याणमय शिवतत्त्व के विचार में तत्पर को नमस्कार है। 723. **श्रीमते नमः** – अणिमा आदि विभूतियों से सम्पन्न को नमस्कार है।

724. शिखिश्रीपर्वतप्रियाय नमः – कुमार कार्तिकेय के निवासभूत श्रीशैल नामक पर्वत से प्रेम करनेवाले को नमस्कार है। **725. वज्रहस्ताय नमः –** वज्रधारी इन्द्रस्वरूप को नमस्कार है। **726. सिद्धखड्गाय नमः –** सभी सिद्धियों से युक्त खड्ग धारण करनेवाले अथवा शत्रुओं को मार गिराने में जिनकी तलवार कभी असफल नहीं होती, उसे नमस्कार है। **727. नरसिंहनिपातनाय नमः –** शरभरूप से नृसिंह को धराशायी करनेवाले अथवा उनके गर्व को दूर करनेवाले को नमस्कार है।

728. ब्रह्मचारिणे नमः – भगवती उमा के प्रेम की परीक्षा लेने के लिये ब्रह्मचारीरूप से प्रकट को नमस्कार है। **729. लोकचारिणे नमः –** समस्त लोकों में विचरनेवाले को नमस्कार है। **730. धर्मचारिणे नमः –** धर्म का आचरण करनेवाले को नमस्कार है। **731. धनाधिपाय नमः –** धन के अधिपति कुबेर या सभी प्रकार की सम्पत्तियों के स्वामी को नमस्कार है। **732. नन्दिने नमः –** नन्दी नामक गणरूप में अवतीर्ण को नमस्कार है। **733. नन्दीश्वराय नमः –** नन्दीश्वर नाम से प्रसिद्ध वृषभ को नमस्कार है। **734. अनन्ताय नमः –** देशकाल आदि की सीमा से रहित को नमस्कार है। **735. नग्नव्रतधराय नमः –** दिगम्बर रहने का व्रत धारण करनेवाले को नमस्कार है। **736. शुचये नमः –** दोषों से रहित अथवा नित्यशुद्ध को नमस्कार है।

737. लिङ्गाध्यक्षाय नमः – लिंगदेह के द्रष्टा अथवा बाणादि लिंगरूप में अध्यक्ष को नमस्कार है। **738. सुराध्यक्षाय नमः –** देवताओं के अधिपति या स्वामी को नमस्कार है। **739. योगाध्यक्षाय नमः –** योगेश्वर या योगशास्त्र के प्रवर्तक को नमस्कार है। **740. युगावहाय नमः –** युग के निर्वाहक अथवा सतयुग आदि को समय पर प्राप्त करानेवाले को नमस्कार है। **741. स्वधर्मणे नमः –** आत्मविचाररूप धर्म में स्थित अथवा स्वधर्मपरायण को नमस्कार है। **742. स्वर्गताय नमः –** स्वर्गलोक में स्थित को नमस्कार है। **743. स्वर्गस्वराय नमः –** स्वर्ग लोक में जिनके यश का गान किया जाता है उसे नमस्कार है। **744. स्वरमयस्वनाय नमः –** सात प्रकार के स्वरों से युक्त ध्वनिवाले को नमस्कार है।

745. बाणाध्यक्षाय नमः – बाणासुर के स्वामी अथवा बाणलिंग नर्मदेश्वर में अधिदेवतारूप से स्थित को नमस्कार है। **746. बीजकर्त्रे नमः –** बीज के उत्पादक को नमस्कार है। **747. धर्मकृद्धर्मसम्भवाय नमः –** धर्म के पालक और उत्पादक अथवा पुण्यात्माओं का धर्म जिससे उत्पन्न होता है, उसे नमस्कार है। **748. दम्भाय नमः –** भक्तों की परीक्षा के निमित्त माया से रूप बनानेवाले अथवा मायामय रूपधारी को नमस्कार है। **749. अलोभाय नमः –** लोभरहित को नमस्कार है। **750. अर्थविच्छम्भवे नमः –** सबके प्रयोजन को जाननेवाले कल्याणनिकेतन शिव को नमस्कार है। **751. सर्वभूतमहेश्वराय नमः –** सम्पूर्ण प्राणियों के परमेश्वर को नमस्कार है।

752. श्मशाननिलयाय नमः – श्मशानवासी को नमस्कार है। **753. त्र्यक्षाय नमः –** त्रिनेत्रधारी को नमस्कार है। **754. सेतवे नमः –** धर्ममर्यादा के पालक अथवा संसारसागर से पार उतरने के सेतु को नमस्कार है। **755. अप्रतिमाकृतये नमः –** अनुपम रूपवाले को नमस्कार है। **756. लोकोत्तरस्फुटालोकाय नमः –** अलौकिक एवं सुस्पष्ट प्रकाश से युक्त को नमस्कार है। **757. त्र्यम्बकाय नमः –** त्रिनेत्रधारी अथवा

त्र्यम्बक नामक ज्योतिर्लिंग को नमस्कार है। **758. नागभूषणाय नमः** – नागहार से विभूषित को नमस्कार है।

759. अन्धकारिणे नमः – अन्धकासुर का वध करनेवाले को नमस्कार है। **760. मखद्वेषिणे नमः** – दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करनेवाले को नमस्कार है। **761. विष्णुकन्धरपातनाय नमः** – यज्ञमय विष्णु का गला काटनेवाले को नमस्कार है। **762. हीनदोषाय नमः** – दोषरहित को नमस्कार है। **763. अक्षयगुणाय नमः** – अविनाशी गुणों से युक्त को नमस्कार है। **764. दक्षारये नमः** – दक्षप्रजापति के द्रोही को नमस्कार है। **765. पूषदन्तभिदे नमः** – पूषा देवता के दाँत तोड़नेवाले को नमस्कार है।

766. धूर्जटये नमः – जटा के भार से विभूषित को नमस्कार है। **767. खण्डपरशवे नमः** – खण्डित परशुवाले अथवा जिनका परशु सबका छेदन करनेवाला है, उसे नमस्कार है। **768. सकलनिष्कलाय नमः** – साकार एवं निराकार परमात्मा को नमस्कार है। **769. अनघाय नमः** – पाप के स्पर्श से शून्य को नमस्कार है। **770. अकालाय नमः** – काल के प्रभाव से रहित को नमस्कार है। **771. सकलाधाराय नमः** – सम्पूर्ण जगत् अथवा सबके आधार को नमस्कार है। **772. पाण्डुराभाय नमः** – श्वेत कान्तिवाले को नमस्कार है। **773. मृडनटाय नमः** – सुखदायक एवं ताण्डवनृत्यकारी को नमस्कार है।

774. पूर्णाय नमः – सब कलाओं से पूर्ण या सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा को नमस्कार है। **775. पूरयित्रे नमः** – भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करनेवाले को नमस्कार है। **776. पुण्याय नमः** – स्मरण करने से ही पाप को दूर करनेवाले अथवा परम पवित्र को नमस्कार है। **777. सुकुमाराय नमः** – जिनके स्कन्द नामक सुन्दर पुत्र हैं उन्हें नमस्कार है। **778. सुलोचनाय नमः** – सुन्दर नेत्रवाले को नमस्कार है। **779. सामगेयप्रियाय नमः** – सामगान के प्रेमी अथवा साम गानेवालों के प्रिय को नमस्कार है। **780. अक्रूराय नमः** – क्रूरतारहित को नमस्कार है। **781. पुण्यकीर्तये नमः** – जिसकी कीर्ति पाप नाश करनेवाली है अथवा पवित्र कीर्तिवाले को नमस्कार है। **782. अनामयाय नमः** – रोग-शोक से रहित को नमस्कार है।

783. मनोजवाय नमः – (भक्तों के दुःख को दूर करने में) मन के समान वेगशाली को नमस्कार है। **784. तीर्थकराय नमः** – तीर्थों के निर्माता को नमस्कार है। **785. जटिलाय नमः** – जटाजूटधारी को नमस्कार है। **786. जीवितेश्वराय नमः** – सब प्राणियों को प्राण देनेवाले अथवा सबके प्राणेश्वर को नमस्कार है। **787. जीवितान्तकराय नमः** – प्रलयकाल में सबके जीवन का अन्त करनेवाले को नमस्कार है। **788. नित्याय नमः** – सनातन को नमस्कार है। **789. वसुरेतसे नमः** – सुवर्णमय वीर्यवाले को नमस्कार है। **790. वसुप्रदाय नमः** – धनदाता अथवा भक्तों के निमित्त रत्नों के देनेवाले को नमस्कार है।

791. सद्गतये नमः – सत्पुरुषों के आश्रय को नमस्कार है। **792. सत्कृतये नमः** – शुभ कर्म करनेवाले को नमस्कार है। **793. सिद्धये नमः** – सिद्धिस्वरूप को नमस्कार है। **794. सज्जातये नमः** – सत्पुरुषों के जन्मदाता को नमस्कार है। **795. खलकण्टकाय नमः** – दुष्टों के लिये कण्टकरूप को नमस्कार है। **796. कलाधराय नमः** – शिल्पादि चौसठ कलाओं को धारण करनेवाले अथवा कलाधारी को नमस्कार है। **797. महाकालभूताय नमः** – महाकाल नामक ज्योतिर्लिङ्गस्वरूप अथवा काल के भी काल

होने से महाकालरूप को नमस्कार है। 798. **सत्यपरायणाय नमः** – सत्यनिष्ठ को नमस्कार है।

799. **लोकलावण्यकर्त्रे नमः** – लोक की सुन्दरता का निर्माण करनेवाले अथवा सबको सौन्दर्य प्रदान करनेवाले को नमस्कार है। 800. **लोकोत्तरसुखवालयाय नमः** – लोकोत्तर सुख के आश्रय अथवा सर्वोत्कृष्ट सुख को अधीन रखनेवाले को नमस्कार है। 801. **चन्द्रसंजीवनशास्त्रे नमः** – सोमनाथरूप से चन्द्रमा को जीवन प्रदान करनेवाले सर्वशासक शिव को नमस्कार है। 802. **लोकगूढाय नमः** – समस्त संसार में अव्यक्तरूप से व्यापक को नमस्कार है। 803. **महाधिपाय नमः** – महान् ईश्वर या महेश्वर को नमस्कार है।

804. **लोकबन्धुलोकनाथाय नमः** – सम्पूर्ण लोकों के बन्धु एवं रक्षक को नमस्कार है। 805. **कृतज्ञाय नमः** – उपकार को माननेवाले अथवा प्राणियों के पुण्यकर्म को जाननेवाले को नमस्कार है। 806. **कीर्तिभूषणाय नमः** – उत्तम यश से विभूषित को नमस्कार है। 807. **अनपायाऽक्षराय नमः** – विनाशरहित या अविनाशी या नित्यस्वरूप को नमस्कार है। 808. **कान्ताय नमः** – प्रजापति दक्ष का अन्त करनेवाले को नमस्कार है। 809. **सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः** – सम्पूर्ण शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ को नमस्कार है।

810. **तेजोमयद्युतिधराय नमः** – तेजस्वी एवं कान्तिमान् को नमस्कार है। 811. **लोकानामग्रणिने नमः** – सम्पूर्ण जगत् के लिये अग्रगण्य देवता अथवा जगत् को आगे बढ़ानेवाले को नमस्कार है। 812. **अणवे नमः** – अत्यन्त सूक्ष्म को नमस्कार है। 813. **शुचिस्मिताय नमः** – पवित्र मुसकानवाले को नमस्कार है। 814. **प्रसन्नात्मने नमः** – हर्षभरे हृदयवाले को नमस्कार है। 815. **दुर्जेयाय नमः** – जिन पर विजय पाना संभव नहीं है, उसे नमस्कार है। 816. **दुरतिक्रमाय नमः** – दुर्लंघ्य को नमस्कार है।

817. **ज्योतिर्मयाय नमः** – तेजोमय को नमस्कार है। 818. **जगन्नाथाय नमः** – विश्वनाथ अथवा अनन्त ब्रह्माण्ड के स्वामी को नमस्कार है। 819. **निराकाराय नमः** – आकाररहित परमात्मा को नमस्कार है। 820. **जलेश्वराय नमः** – जल के स्वामी अथवा गंगा के पति को नमस्कार है। 821. **तुम्बवीणाय नमः** – तूंबीफल की वीणा बजानेवाले को नमस्कार है। 822. **महाकोपाय नमः** – संहार के समय महान् क्रोध करनेवाले को नमस्कार है। 823. **विशोकाय नमः** – शोकरहित को नमस्कार है। 824. **शोकनाशनाय नमः** – शोक का नाश करनेवाले को नमस्कार है।

825. **त्रिलोकपाय नमः** – त्रिलोक के पालक को नमस्कार है। 826. **त्रिलोकेशाय नमः** – त्रिभुवन के स्वामी को नमस्कार है। 827. **सर्वशुद्धये नमः** – सबकी शुद्धि करनेवाले अथवा जिससे सब प्राणियों की शुद्धि होती है, उसे नमस्कार है। 828. **अधोक्षजाय नमः** – इन्द्रियों एवं उनके विषयों से अतीत अथवा जिससे पतन नहीं होता, उसे नमस्कार है। 829. **अव्यक्तलक्षणदेवाय नमः** – अव्यक्त लक्षणवाले देवता को नमस्कार है। 830. **व्यक्ताव्यक्ताय नमः** – स्थूल और सूक्ष्मरूप अर्थात् गुणों की उपाधि से व्यक्त होकर भी निर्गुणरूप होने से जो अव्यक्त है, उसे नमस्कार है। 831. **विशाम्पतये नमः** – सकल प्रजा के पालक को नमस्कार है।

832. **वरशीलाय नमः** – श्रेष्ठशील या स्वभाववाले अथवा जिससे श्रेष्ठ शील प्राप्त होता है, उसे नमस्कार है। 833. **वरगुणाय नमः** – उत्तम गुणोंवाले को नमस्कार है। 834. **साराय नमः** – सारतत्त्व को

नमस्कार है। 835. **मानधनाय नमः** – स्वाभिमान के धनी को नमस्कार है। 836. **मयाय नमः** – सुखस्वरूप को नमस्कार है। 837. **ब्रह्मणे नमः** – सृष्टिकर्ता ब्रह्मास्वरूप को नमस्कार है। 838. **विष्णुप्रजापालाय नमः** – प्रजापालक विष्णु को नमस्कार है। 839. **हंसाय नमः** – सूर्यस्वरूप या अज्ञाननाशक परमात्मस्वरूप को नमस्कार है। 840. **हंसगतये नमः** – हंस के समान चालवाले अथवा योगियों की गति को नमस्कार है। 841. **वयाय नमः** – गरुड़ पक्षीरूप को नमस्कार है।

842. **वेधोविधातृधात्रे नमः** – जगत् को उत्पन्न करने से वेधा (ब्रह्मा), कर्म और उनके फल देने से विधाता और अनेक रूप से संसार को धारण करनेवाला होने से धाता कहे जानेवाले को नमस्कार है। 843. **स्रष्ट्रे नमः** – जगत् को उत्पन्न करनेवाले को नमस्कार है। 844. **हर्त्रे नमः** – संहारकारी को नमस्कार है। 845. **चतुर्मुखाय नमः** – चार मुखवाले ब्रह्मा को नमस्कार है। 846. **कैलासशिखरावासिने नमः** – कैलास शिखर पर निवास करनेवाले को नमस्कार है। 847. **सर्वावासिने नमः** – सर्वव्यापी या सबमें निवास करनेवाले को नमस्कार है। 848. **सदागतये नमः** – निरन्तर गतिशील वायुदेवता अथवा सबको गति प्रदान करनेवाले को नमस्कार है।

849. **हिरण्यगर्भाय नमः** – ब्रह्मारूप को नमस्कार है। 850. **द्रुहिणाय नमः** – ब्रह्मास्वरूप को नमस्कार है। 851. **भूतपालाय नमः** – प्राणियों का पालन करनेवाले को नमस्कार है। 852. **भूपतये नमः** – पृथ्वी के स्वामी को नमस्कार है। 853. **सद्योगिने नमः** – श्रेष्ठयोगी अथवा सत्कर्म की योजना करनेवाले को नमस्कार है। 854. **योगविद्योगिने नमः** – योग-विद्या के ज्ञाता योगी को नमस्कार है। 855. **वरदाय नमः** – वर देनेवाले को नमस्कार है। 856. **ब्राह्मणप्रियाय नमः** – ब्राह्मणों के प्रेमी अथवा ब्राह्मणों के प्यारे को नमस्कार है।

857. **देवप्रियदेवनाथाय नमः** – देवताओं के प्रिय तथा रक्षक को नमस्कार है। 858. **देवज्ञाय नमः** – देवतत्त्व के ज्ञाता को नमस्कार है। 859. **देवचिन्तकाय नमः** – देवताओं का विचार करनेवाले अथवा देवता भी जिनके चिन्तक हैं उन्हें नमस्कार है। 860. **विषमाक्षाय नमः** – विषम नेत्रवाले (त्रिनेत्र) को नमस्कार है। 861. **विशालाक्षाय नमः** – बड़े-बड़े नेत्रवाले को नमस्कार है। 862. **वृषदवृषवर्धनाय नमः** – धर्म का दान और वृद्धि करनेवाले को नमस्कार है।

863. **निर्ममाय नमः** – ममतारहित को नमस्कार है। 864. **निरहंकाराय नमः** – अहंकाररहित को नमस्कार है। 865. **निर्मोहाय नमः** – मोहशून्य को नमस्कार है। 866. **निरुपद्रवाय नमः** – उपद्रवरहित को नमस्कार है। 867. **दर्पघ्नदर्पदाय नमः** – अभिमान का हनन एवं खण्डन करनेवाले को नमस्कार है। 868. **दृप्ताय नमः** – स्वाभिमानी अथवा अपनी आत्मा के अमृतस्वाद से नित्य प्रसन्न रहनेवाले को नमस्कार है। 869. **सर्वर्तुपरिवर्तकाय नमः** – समस्त ऋतुओं को बदलते रहनेवाले को नमस्कार है।

870. **सहस्रजिते नमः** – सहस्रों पर विजय पानेवाले को नमस्कार है। 871. **सहस्रार्चिषे नमः** – सहस्रों किरणों से प्रकाशमान सूर्यरूप को नमस्कार है। 872. **स्निग्धप्रकृतिदक्षिणाय नमः** – स्नेहयुक्त

स्वभावाले तथा उदार को नमस्कार है। 873. **भूतभव्यभवन्नाथाय नमः** – भूत, भविष्य एवं वर्तमान के स्वामी को नमस्कार है। 874. **प्रभवाय नमः** – सबकी उत्पत्ति के कारण को नमस्कार है। 875. **भूतिनाशनाय नमः** – दुष्टों के ऐश्वर्य का नाश करनेवाले को नमस्कार है।

876. **अर्थाय नमः** – परमपुरुषार्थरूप को नमस्कार है। 877. **अनर्थाय नमः** – प्रयोजनरहित को नमस्कार है। 878. **महाकोशाय नमः** – अनन्त धनराशि के स्वामी को नमस्कार है। 879. **परकार्यैकपण्डिताय नमः** – पराये कार्य को सिद्ध करने की कला के एकमात्र विद्वान् अथवा मोक्षरूपी कार्य के एकमात्र पंडित को नमस्कार है। 880. **निष्कण्टकाय नमः** – कण्टकरहित को नमस्कार है। 881. **कृतानन्दाय नमः** – नित्यसिद्ध आनदस्वरूप अथवा अच्छिन्न आनंदयुक्त को नमस्कार है। 882. **निर्व्याजव्याजमर्दनाय नमः** – स्वयं कपटरहित होकर दूसरे के कपट को नष्ट करनेवाले को नमस्कार है।

883. **सत्त्ववते नमः** – सत्त्वगुण से युक्त को नमस्कार है। 884. **सात्त्विकाय नमः** – सत्त्वनिष्ठ अर्थात् सतोगुण में स्थित को नमस्कार है। 885. **सत्यकीर्तये नमः** – यथार्थ कीर्तिवाले को नमस्कार है। 886. **स्नेहकृतागमाय नमः** – जीवों के प्रति स्नेह के कारण विभिन्न आगमों अथवा शास्त्रों को प्रकाश में लानेवाले को नमस्कार है। 887. **अकम्पिताय नमः** – निश्चल या सुस्थिर को नमस्कार है। 888. **गुणग्राहिणे नमः** – गुणों का आदर करनेवाले अथवा भक्तों का आदर करनेवाले को नमस्कार है। 889. **नैकात्मनैककर्मकृते नमः** – अनेकरूप होकर अनेक प्रकार के कर्म करनेवाले को नमस्कार है।

890. **सुप्रीताय नमः** – अत्यन्त प्रसन्न अथवा श्रेष्ठ प्रसादयुक्त को नमस्कार है। 891. **सुमुखाय नमः** – सुन्दर मुखवाले को नमस्कार है। 892. **सूक्ष्माय नमः** – स्थूलभाव से रहित अथवा सबमें व्यापक को नमस्कार है। 893. **सुकराय नमः** – (वर देने से) सुन्दर हाथवाले को नमस्कार है। 894. **दक्षिणानिलाय नमः** – मलयानिल या मलयपवन के समान सुखद को नमस्कार है। 895. **नन्दिस्कन्धधराय नमः** – नन्दी की पीठ पर सवार होनेवाले को नमस्कार है। 896. **धुर्याय नमः** – उत्तरदायित्व का भार वहन करने में समर्थ को नमस्कार है। 897. **प्रकटाय नमः** – भक्तों के सामने प्रकट होनेवाले अथवा ज्ञानियों के सामने नित्य प्रकट अथवा सूर्यादिरूप से सबको प्रत्यक्ष होनेवाले को नमस्कार है। 898. **प्रीतिवर्धनाय नमः** – प्रेम बढ़ानेवाले को नमस्कार है।

899. **अपराजिताय नमः** – किसी से भी परास्त न होनेवाले को नमस्कार है। 900. **सर्वसत्त्वाय नमः** – सम्पूर्ण सत्त्वगुण के आश्रय अथवा समस्त प्राणियों की उत्पत्ति के हेतु को नमस्कार है। 901. **गोविन्दाय नमः** – गोलोक की प्राप्ति करानेवाले को नमस्कार है। 902. **सत्त्ववाहनाय नमः** – सत्त्वस्वरूप धर्ममय वृषभ से वाहन का काम लेनेवाले को नमस्कार है। 903. **अधृताय नमः** – आधाररहित को नमस्कार है। 904. **स्वधृताय नमः** – अपने-आप में स्थित को नमस्कार है। 905. **सिद्धाय नमः** – नित्यसिद्ध अथवा सभी सिद्धियों से युक्त को नमस्कार है। 906. **पूतमूर्तये नमः** – पवित्र शरीरवाले को नमस्कार है। 907. **यशोधनाय नमः** – सुयश के धनी को नमस्कार है।

908. वाराहशृङ्गधृक्छृङ्गिणे नमः – वाराह को मारकर उसके दाढ़रूपी शृङ्गों को धारण करने के कारण शृङ्गी नाम से प्रसिद्ध को नमस्कार है। **909. बलवते नमः** – सर्वशक्तियुक्त या शक्तिशाली को नमस्कार है। **910. एकनायकाय नमः** – अद्वितीय नेता को नमस्कार है। **911. श्रुतिप्रकाशाय नमः** – वेदों को प्रकाशित करनेवाले अथवा वेदों से प्रकाशित होनेवाले को नमस्कार है। **912. श्रुतिमते नमः** – वेदज्ञान से सम्पन्न को नमस्कार है। **913. एकबन्धवे नमः** – सबके एकमात्र सहायक अथवा अद्वितीय बन्धु को नमस्कार है। **914. अनेककृते नमः** – अनेक प्रकार के पदार्थों की सृष्टि करनेवाले को नमस्कार है।

915. श्रीवत्सलशिवारम्भाय नमः – श्रीवत्सधारी विष्णु के लिये मंगलकारी को नमस्कार है। **916. शान्तभद्राय नमः** – शान्त एवं मंगलरूप अथवा सत्पुरुषों का मंगल करनेवाले को नमस्कार है। **917. समाय नमः** – सर्वत्र समभाव रखनेवाले को नमस्कार है। **918. यशसे नमः** – यशस्वरूप को नमस्कार है। **919. भूशयाय नमः** – पृथ्वी पर शयन करनेवाले को नमस्कार है। **920. भूषणाय नमः** – सबको विभूषित करनेवाले को नमस्कार है। **921. भूतये नमः** – कल्याणस्वरूप अथवा सर्वसम्पत्स्वरूप को नमस्कार है। **922. भूतकृते नमः** – प्राणियों की सृष्टि करनेवाले को नमस्कार है। **923. भूतभावनाय नमः** – भूतों के उत्पादक को नमस्कार है।

924. अकम्पाय नमः – कम्पित न होनेवाले या स्थिर को नमस्कार है। **925. भक्तिकायाय नमः** – भक्तिस्वरूप को नमस्कार है। **926. कालघ्ने नमः** – कालनाशक को नमस्कार है। **927. नीललोहिताय नमः** – नील एवं लोहित वर्णवाले को नमस्कार है। **928. सत्यव्रतमहात्यागिने नमः** – सत्यव्रतधारी एवं महान् त्यागी को नमस्कार है। **929. नित्यशान्तिपरायणाय नमः** – निरन्तर शान्त को नमस्कार है।

930. परार्थवृत्तिवरदाय नमः – परोपकारव्रती एवं अभीष्ट वरदाता को नमस्कार है। **931. विरक्ताय नमः** – वैराग्यवान् को नमस्कार है। **932. विशारदाय नमः** – विज्ञानवान् अथवा सम्पूर्ण विद्याओं एवं कलाओं में निपुण को नमस्कार है। **933. शुभदशुभकर्त्रे नमः** – शुभ देने और करनेवाले को नमस्कार है। **934. शुभनामशुभाय नमः** – स्वयं शुभस्वरूप होने के कारण शुभ नामधारी को नमस्कार है।

935. अनर्थिताय नमः – याचनारहित को नमस्कार है। **936. अगुणाय नमः** – निर्गुण को नमस्कार है। **937. साक्ष्यकर्त्रे नमः** – द्रष्टा एवं कर्तृत्वरहित को नमस्कार है। **938. कनकप्रभाय नमः** – सुवर्ण के समान कान्तिमान् को नमस्कार है। **939. स्वभावभद्राय नमः** – स्वभावतः कल्याणकारी को नमस्कार है। **940. मध्यस्थाय नमः** – ब्रह्मा एवं विष्णु के मध्य में स्थित अथवा उदासीन को नमस्कार है। **941. शत्रुघ्नाय नमः** – शत्रुनाशक को नमस्कार है। **942. विघ्ननाशनाय नमः** – विघ्नों का निवारण करनेवाले को नमस्कार है।

943. शिखण्डिकवचिशूलिने नमः – मोरपंख, कवच और त्रिशूल धारण करनेवाले को नमस्कार है। **944. जटिमुण्डिकुण्डलिने नमः** – जटा, मुण्डमाला और कवच अथवा (सर्पो के) कुण्डल धारण

करनेवाले को नमस्कार है। **945. अमृत्यवे नमः –** मृत्युरहित को नमस्कार है। **946. सर्वदृक्सिंहाय नमः –** सर्वज्ञों में श्रेष्ठ अथवा सबके द्रष्टा और दुष्टों के नाश करने में सिंहस्वरूप को नमस्कार है। **947. तेजोराशिमहामणये नमः –** तेजःपुञ्ज महामणि कौस्तुभादिरूप को नमस्कार है।

948. असंख्येयाऽप्रमेयात्मने नमः – असंख्य नाम, रूप और गुणों से युक्त होने के कारण किसी के द्वारा मापे न जा सकनेवाले को नमस्कार है। **949. वीर्यवद्वीर्यकोविदाय नमः –** पराक्रमी एवं पराक्रम के ज्ञाता को नमस्कार है। **950. वेद्याय नमः –** (मुमुक्षुओं के) जाननेयोग्य को नमस्कार है। **951. वियोगात्मने नमः –** विशिष्ट योग की साधना में संलग्न हुए मनवाले अथवा दीर्घकालतक सती के वियोग में रहनेवाले को नमस्कार है। **952. परावरमुनीश्वराय नमः –** भूत एवं भविष्य के ज्ञाता मुनीश्वररूप को नमस्कार है।

953. अनुत्तमदुराधर्षाय नमः – सर्वोत्तम तथा दुर्जय को नमस्कार है। **954. मधुरप्रियदर्शनाय नमः –** जिनका दर्शन मनोहर एवं प्रिय लगता है उसे नमस्कार है। **955. सुरेशाय नमः –** देवताओं के अधिपति को नमस्कार है। **956. शरणाय नमः –** (सबके) आश्रयदाता को नमस्कार है। **957. सर्वाय नमः –** सर्वस्वरूप या विश्वरूप को नमस्कार है। **958. शब्दब्रह्मसद्गतये नमः –** प्रणवरूप या वेदस्वरूप तथा सत्पुरुषों के आश्रय को नमस्कार है।

959. कालपक्षाय नमः – काल (सृष्टिप्रक्रिया में) जिनका सहायक है, उन्हें नमस्कार है। **960. कालकालाय नमः –** काल के भी काल या काल के उत्पादक को नमस्कार है। **961. कङ्कणीकृतवासुकये नमः –** जिन्होंने वासुकी नाग का कंकण धारण किया है उसे नमस्कार है। **962. महेष्वासाय नमः –** महाधनुर्धर या बड़े धनुषवाले को नमस्कार है। **963. महीभर्त्रे नमः –** पृथ्वी के पालक को नमस्कार है। **964. निष्कलङ्काय नमः –** कलंकशून्य या अविद्यारहित को नमस्कार है। **965. विशृङ्खलाय नमः –** (माया के) बन्धन से रहित को नमस्कार है।

966. द्युमणितरणये नमः – आकाश में मणि के समान प्रकाशमान तथा भक्तों को भवसागर से तारने के लिये नौकारूप सूर्य को नमस्कार है। **967. धन्याय नमः –** कृतकृत्य को नमस्कार है। **968. सिद्धिदसिद्धिसाधनाय नमः –** सिद्धिदाता और सिद्धि के साधक को नमस्कार है। **969. विश्वतः संवृताय नमः –** सब ओर से माया द्वारा आवृत या आच्छादित को नमस्कार है। **970. स्तुत्याय नमः –** (देव और असुरों सभी द्वारा) स्तुति के योग्य को नमस्कार है। **971. व्यूढोरस्काय नमः –** चौड़ी छातीवाले को नमस्कार है। **972. महाभुजाय नमः –** बड़ी भुजावाले को नमस्कार है।

973. सर्वयोनये नमः – सबकी उत्पत्ति के स्थान को नमस्कार है। **974. निरातङ्काय नमः –** निर्भय या आंतकरहित को नमस्कार है। **975. नरनारायणप्रियाय नमः –** नर-नारायण नामक ऋषि के प्रेमी या प्रियतम को नमस्कार है। **976. निर्लेपनिष्प्रपञ्चात्मने नमः –** कर्मसंबंध अथवा दोषसंपर्क से रहित तथा जगत्प्रपंच से अतीत स्वरूपवाले को नमस्कार है। **977. निर्व्यङ्गाय नमः –** विशिष्ट अंगवाले प्राणियों

के प्राकट्य में हेतु को नमस्कार है। **978. व्यङ्गनाशनाय नमः** – यज्ञादि कर्मों में होनेवाले अंगवैगुण्य का नाश करनेवाले को नमस्कार है।

979. स्तव्याय नमः – स्तुति के योग्य को नमस्कार है। **980.स्तवप्रियाय नमः** – स्तुति के प्रेमी को नमस्कार है। **981. स्तोत्रे नमः** – स्तुति करनेवाले अथवा भक्त जिनकी स्तुति करते हैं, उन्हें नमस्कार है। **982. व्यासमूर्तये नमः** – महर्षि व्यास जिनकी मूर्ति हैं, उन्हें नमस्कार है। **983. निरङ्कुशाय नमः** – (मायारूप) अंकुश से रहित स्वतंत्र को नमस्कार है। **984. निरवद्यमयोपायाय नमः** – मोक्षप्राप्ति के निर्दोष उपायरूप को नमस्कार है। **985. विद्याराशये नमः** – विद्याओं के सागर को नमस्कार है। **986. रसप्रियाय नमः** – भक्तिरस या ब्रह्मानन्दरस के प्रेमी को नमस्कार है।

987. प्रशान्तबुद्धये नमः – शान्त बुद्धिवाले को नमस्कार है। **988. अक्षुण्णाय नमः** – क्षोभ या नाश से रहित को नमस्कार है। **989. संग्रहिणे नमः** – भक्तों का संग्रह करनेवाले को नमस्कार है। **990. नित्यसुन्दराय नमः** – सब काल में सुन्दर अथवा सतत मनोहर को नमस्कार है। **991. वैयाघ्रधुर्याय नमः** – व्याघ्रचर्मधारी को नमस्कार है। **992. धात्रीशाय नमः** – ब्रह्माजी के स्वामी अथवा पृथ्वी के स्वामी को नमस्कार है। **993. शाकल्याय नमः** – शाकल्य ऋषिरूप को नमस्कार है। **994. शर्वरीपतये नमः** – रात्रि के स्वामी चन्द्रमारूप को नमस्कार है।

995. परमार्थगुरुदत्तसूरये नमः – परमार्थतत्त्व का उपदेश देनेवाले ज्ञानी गुरु दत्तात्रेयस्वरूप को नमस्कार है। **996. आश्रितवत्सलाय नमः** – शरणागतों पर दया करनेवाले को नमस्कार है। **997. सोमाय नमः** – उमासहित को नमस्कार है। **998. रसज्ञाय नमः** – भक्तिरस के ज्ञाता को नमस्कार है। **999. रसदाय नमः** – प्रेमरस प्रदान करनेवाले को नमस्कार है। **1000. सर्वसत्त्वावलम्बनाय नमः** – समस्त प्राणियों को सहारा देनेवाले को नमस्कार है।

सूतजी बोले – हे मुनियों! इस प्रकार भगवान् विष्णु ने शिवजी के सहस्र नामों का क्रम से उच्चारण करते हुए एक – एक कमल का फूल आशुतोष के मस्तक पर चढ़ाया। इसके पश्चात् कौतुकी शंकरजी ने जो अधिक आश्चर्यमय चरित किया, उसे भी आप आदर से सुनिये –

स्तोत्र – माहात्म्य

शिवजी अपना स्तोत्र सुन अतीव प्रसन्न हुए। तदनन्तर उन्होंने विष्णु की परीक्षा लेने के लिये हजार कमलों में से एक कमल को छिपा दिया। सहस्र कमलों में एक कमल न देखकर भगवान् विष्णु उनके पूजन के समय बड़े विकल हुए और सोचने लगे – अरे! एक कमल कहाँ चला गया? यदि चला गया तो सुख से जाने दो। मेरा नेत्र क्या कमल नहीं है ऐसा सोचकर हरि ने सात्त्विक बल के आश्रय से एक नेत्र निकालकर कमल की भावना से इष्टदेव का पूजन और स्तवन किया। उस समय हर – हर कहते हुए उसी पार्थिवमूर्ति से शिवजी प्रकट होकर भगवान् विष्णु को सुदर्शन चक्र देते हुए बोले – हे हरे! मैं तुम्हारी अभिलाषा जानता हूँ। तुमने देवों के हितार्थ सभी प्रकार के भय से मुक्त होने के लिये मेरे सहस्र नामों का जो जप एवं उपासना – कर्म किया है उसके कारण मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ। तुम्हारे

सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह मेरे द्वारा दिया गया सुदर्शन चक्र तुम्हें सभी प्रकार के भयों से मुक्त करने में सक्षम रहेगा। अतः अब तुम इसे धारण करो। हे विष्णो! जो प्राणी प्रातः मेरे इन हजार नामों का उच्चारण करके पाठ करेगा, उसे समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होंगी। हे हरे! मुझे प्रसन्न जानकर तुम अन्य कोई वरदान मुझसे और माँग लो। तब भगवान् विष्णु ने भगवान् आशुतोष से उनकी भक्ति का वरदान माँगकर उनसे उनकी कृपा की याचना की। भगवान् शिव ने कहा–हे विष्णु! आज से विश्व तुम्हें विश्वम्भर के नाम से पुकारेगा। तुम प्रत्येक काल में सभी के द्वारा पूजित होगे। सूतजी बोले–इस प्रकार चक्र सुदर्शन तथा वर देकर भगवान् शिव अन्तर्धान हो गये। तत्पश्चात् भगवान् विष्णु ने राक्षसों आदि का संहार कर देवों पर उपकार किया।(शिवपुराण, कोटिरुद्रसंहिता, अ. 34–36)

(उपर्युक्त सहस्रनाम मुख्यतः गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण की प्रति पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

तीर्थफल के अधिकारी

लोमहर्षणजी मुनियों से कहते हैं कि–

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्त्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते।।

(यह श्लोक स्क. पु. काशी पू. 6/48 में भी पाया जाता है।)

मनो विशुद्धं पुरुषस्य तीर्थ, वाचा तथा चेन्द्रियनिग्रहश्च।
एतानि तीर्थानि शरीरजानि, स्वर्गस्य मार्ग प्रतिबोधयन्ति।।
चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानैर्न शुध्यति।
शतशोऽपि जलैर्धौतं सुराभाण्डमिवाशुचि।।

(यह श्लोक स्क. पु. काशी पू. 6/38 में भी पाया जाता है।)

न तीर्थानि न दानानि न व्रतानि न चाश्रमाः।
दुष्टाशयं दम्भरुचिं पुनन्ति व्युत्थितेन्द्रियम्।।
इन्द्रियाणि वशे कृत्वा यत्र यत्र वसेन्नरः।
तत्र तत्र कुरूक्षेत्रं प्रयागं पुष्करं तथा।। (ब्रह्मपुराण 25/2–6)

अर्थात्–जिसके हाथ, पैर और मन काबू में हों तथा जिसमें विद्या, तप और कीर्ति हो, वह मनुष्य तीर्थ के फल का भागी होता है। पुरुष का शुद्ध मन, शुद्ध वाणी तथा वश में की हुई इन्द्रियाँ–ये शारीरिक तीर्थ हैं, जो स्वर्ग का मार्ग सूचित करती हैं। भीतर का दूषित चित्त तीर्थस्नान से शुद्ध नहीं होता। जिस प्रकार सैकड़ों घड़े के जल से धोने के बावजूद भी शराब का पात्र शुद्ध नहीं होता उसी प्रकार मलिन चित्तवाला भी तीर्थस्नान से पवित्र नहीं हो सकता। जिसका अन्तःकरण दूषित है, जो दम्भ में रुचि रखता है तथा जिसकी इन्द्रियाँ चंचल हैं, उसे तीर्थ, दान, व्रत एवं आश्रम भी पवित्र नहीं कर सकते। मनुष्य इन्द्रियों को अपने वश में करके जहाँ–जहाँ निवास करता है, वहीं–वहीं कुरुक्षेत्र, पुष्कर और प्रयाग आदि तीर्थ वास करने लगते हैं।